UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186728

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—24—4-4-69—5,000

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H294.55A H98P Accession No. H292

Author हुजूर महाराज -

Title प्रेम उपदेश - 1960 -

This book should be returned on or before the date last marked below.

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

प्रेम उपदेश

परम गुरु हुज़ूर महाराज

—प्रकाशक—

राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़ (आगरा)

Post Graduate Library
College of Arts & Commerce, O. U.

राधास्वामी संवत् १४३
सन् १९६० ई०

(*All Rights Reserved*)

H 2929

First Edition 1948 1000
Second Edition 1960 1000

PRINTED BY BABU RAM JADOUN, M. A.
AT THE DAYALBAGH PRESS, DAYALBAGH, AGRA

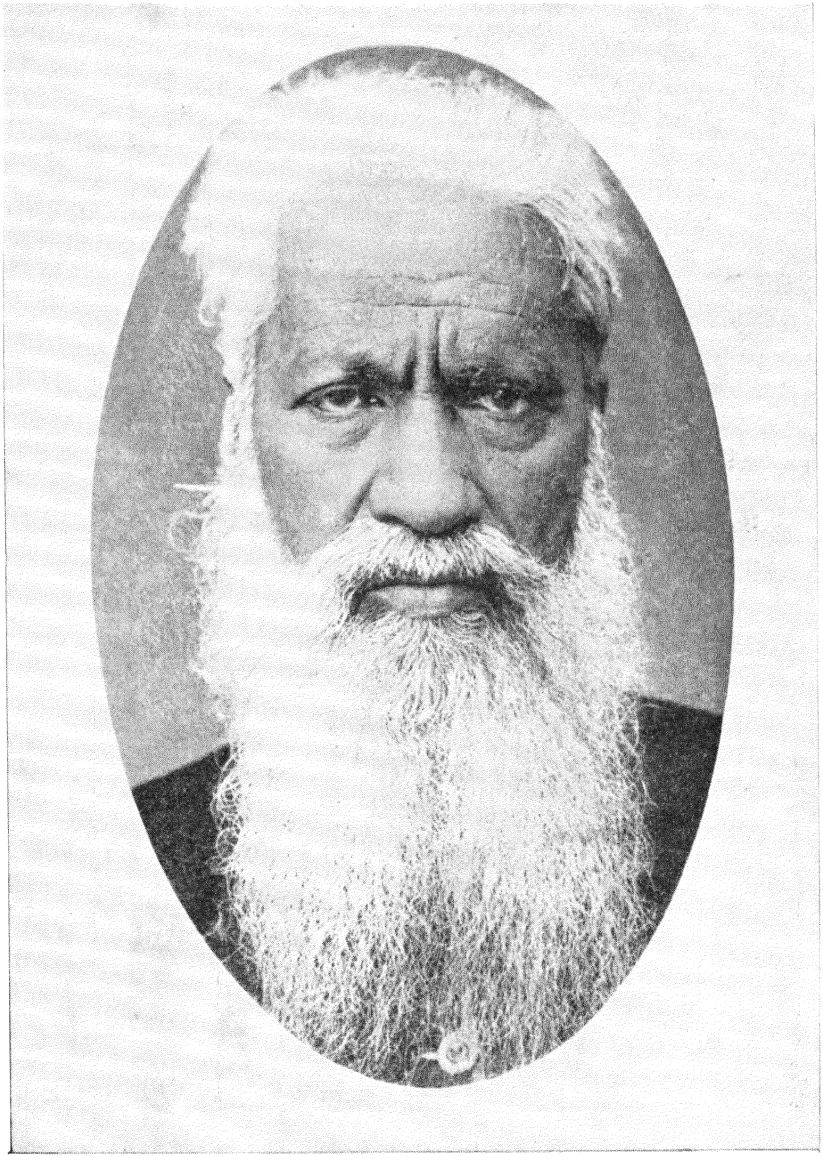

परम गुरु हुज़ूर महाराज

निवेदन

राधास्वामी मत के दूसरे पूज्य आचार्य परम गुरु हुज़ूर महाराज का जन्म १४ मार्च सन् १८२९ ई० को पीपल मंडी आगरा में हुआ था। सन् १८४७ ई० में उन्होंने डाक विभाग में सर्विस शुरू की और सन् १८८१ में वे पश्चिमोत्तर प्रदेश के पोस्टमास्टर जनरल नियुक्त हुए। इस ऊँचे पद पर नियुक्त होने वाले वे पहले हिन्दुस्तानी थे। १५ जून सन् १८७८ ई० को परम गुरु स्वामी जी महाराज के गुप्त होने पर वे राधास्वामी मत के दूसरे आचार्य हुए। सन् १८८७ ई० में उन्होंने सर्विस छोड़ दी। हुज़ूर महाराज ने ६ दिसम्बर सन् १८९८ ई० को गुप्त होने की मौज फ़रमाई।

परम गुरु हुज़ूर महाराज ने अपने समय में राधास्वामी मत पर बहुत सी पुस्तकें लिखने की मौज फ़रमाई। प्रेम बानी में, जो चार भागों में प्रकाशित हुई है, उनके लिखे शब्द हैं और उनके बचन व गद्य लेख प्रेमपत्र में, जिसके ६ भाग हैं, और कुछ छोटी पुस्तकों में शामिल हैं। उन्हीं छोटी पुस्तकों में से एक पुस्तक 'प्रेम उपदेश' भी है। 'प्रेम उपदेश' में भक्ति-मार्ग पर चलने वाले व सुरत-शब्द-योग का साधन करने वाले सज्जनों के लाभ के लिए बड़ी सरल व आकर्षक भाषा में उपदेश के छोटे छोटे बचन दर्ज हैं। उन बचनों के पाठ से प्रेमीजन को धीरज व शांति प्राप्त होती है और हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया का भरोसा व विश्वास चित्त में दृढ़ होता है।

इस पुस्तक को प्रेमी जनों की सहूलियत के लिए राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़ (आगरा) की तरफ़ से प्रथम बार सन् १९४८ में प्रकाशित किया गया था। अब उसका दूसरा संस्करण प्रकाशित किया जाता है।

गुरुसरनदास मेहता
प्रेज़ीडेंट,
राधास्वामी सतसंग सभा।

दयालबाग़ (आगरा)
७ मार्च १९६० ई०

राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय

प्रेम उपदेश

१—दीनता और दासनुदासता[1] से सतगुरु और सत्तपुरुप राधास्वामी राज़ी होते हैं। और प्रमाण इसका प्रगट है कि सबको दीनता पसंद है। और दीनता और दासनुदासता में निहायत शीतलता[2] और आराम और बेफ़िक्री है। और आपा ठानने और अहंकार करने में निहायत तकलीफ़ और निरासता है।

२—मालिक की प्रसन्नता जो चाहते हो, तो मन और संसारियों की अप्रसन्नता[3] का ख़्याल दूर करना चाहिये, क्योंकि जिस काम से मालिक राज़ी होगा उसमें मन को ज़रूर थोड़ी तकलीफ़ होगी और मन की तकलीफ़ से दुनियादार नाराज़ होंगे।

३—दुनियादारों को भक्तों का हाल और चाल देखने से ऐसे ही जलन और दुख होता है जैसे कि भक्तों को अपने दोस्त और रिश्तेदारों का संसार में बंधन और बेपरवाही परमार्थ की देखकर अफ़सोस होता है। ग़रज़ यह कि दुनियादार अपनी नादानी से भक्तों को भूल और चिंता में पड़ा हुआ और दुखी देखते हैं और तान करते हैं और भक्त बसबब खुलने दृष्टि अंतर के दुनियादारों की हालत खराब देख कर और उनके परलोक के बिगड़ने का ख़्याल करके अफ़सोस करते हैं।

४—प्राप्ति मालिक की बिना अभ्यास और मेहनत और प्रेम के मुमकिन नहीं है। और जब तक कि काई[4] भोगों के रस की और

१—दासों का दास होने का भाव। २—शांति। ३—नाराज़ी। ४—मैल।

मैल दुनिया की चाहों का मन के दर्पण[1] से किसी क़दर दूर न होगा, तब तक प्रेम दिल में पैदा न होगा। इस वास्ते किसी क़दर वैराग्य सच्चा ज़रूर चाहिये, तब अभ्यास का आनंद मालूम होवे। और जब तक कि प्रेम नहीं तब तक जो कोई कुछ काम परमार्थी करता है, वह परमार्थी कर्म में दाख़िल होकर सहज सहज सफ़ाई दिल का फल देवेगा। इस वास्ते सबको चाहिये कि राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीति और प्रतीति पैदा करें और उनके हो जावें, यानी सच्ची सरन क़बूल करें तो अलबत्ता उद्धार हो जावेगा।

५–भोग और बिलास दुनियाँ के और सब सामान उसका नाशमान और ज़हर हलाहल है और भूल और ग़फ़लत और सुस्ती और ज़्यादा चाह दुनिया की उससे पैदा होती है और प्रेम चरनकमल सत्तपुरुष राधास्वामी का कम हो जाता है, बल्कि बिलकुल ढक[2] जाता है। हर एक के दिल में प्रेम का भंडार मौजूद है, पर दुनिया की चाह के मैल से ढका हुआ है। सतसंग और भजन और वैराग्य से मैल दूर होता है। जब सफ़ाई प्राप्त हुई, तब ही प्रेम प्रगट हुआ।

६–माया का रूप कनक[3] और कामिनी[4] है, इससे वैराग्य सच्चा करना चाहिये। और बाक़ी सब सामान दुनियाँ के इसके साथ हैं। जब तक कि मुहब्बत उनकी किसी क़दर दूर या कम न होगी और वैराग्य इन पदार्थों की तरफ़ से न आवेगा, तब तक प्रेम का प्रगट होना और मिलना अभ्यास के आनंद का नहीं हो सकता, यानी जब तक कि मन में और आँख में तरह तरह के स्वरूप दुनियाँ के धरे हैं, दर्शन प्रीतम का कैसे प्राप्त होगा?

७–चित्त और मन में दो बिकार[5] हैं–चंचलता और मलीनता। जब तक कि यह दोनों बिकार मन से दूर न होंगे, भजन का रस नहीं आवेगा।

१–शीशा। २–छिप। ३–धन। ४–स्त्री। ५–दोष।

८—पूरा अधिकारी जल्दी मतलब को पहुँचता है, जब सन्मुख पूरे गुरू के आवे और अनधिकारी को एक मुद्दत[1] चाहिये कि दुरुस्त होवे।

९—हुज़ूर राधास्वामी कुल मालिक दयाल हैं और सब हाल देख रहे हैं और जो कुछ है, उनकी मौज से हो रहा है। अलबत्ता बग़ैर बाहरी सहारे के घबराहट बहुत होती है और जब अंतर में सहारा जैसा चाहिये नहीं मिलता और बाहर से भी नहीं, तो घबराहट और बेकली ज़्यादा होती है। पर यह समझना चाहिये कि यह हालत जो मालिक ने अपनी मौज से पैदा करी है, इसमें भी कुछ दया और भेद है, यानी अंतर में कुछ फ़ायदा होने का मतलब है और यह हालत चरनों में प्रीति और प्रतीति की पक्की और गहरी करने वाली है। इससे निरास न होना चाहिये। हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया को अपने निकट देखना और मेहर को अपना निगहबान[2] और रक्षक समझना चाहिये।

१०—घबराहट के साथ कभी कभी शांति और आनंद भी वे ही अपनी मेहर से बख़्शेंगे। भरोसा उनके चरनों का दृढ़[3] रखना और प्रीति चरनों में बढ़ाते रहना चाहिये।

११—राधास्वामी नाम का सुमिरन ज़बानी आहिस्ता आहिस्ता या मन से और स्वरूप का ध्यान, जितना बने बिरह और उमंग लेकर या प्रीति के साथ, करना चाहिये। जब इनमें से कोई बात न हो तो नेम की तरह, और नेम में भी मन न लगे तो उनके चरनों का ख़्याल करते हुए चुप हो रहो, या बानी में से कोई शब्द, जो तुमको अधिक प्यारा लगता होवे, या जिसके पढ़ने से बिरह जागे या प्रीति उमँगे, या रोना आवे, या मन सिमट आवे, अपने मन ही मन में या आहिस्ता आहिस्ता या अपने तौर पर गाकर के पढ़ो और उनकी मेहर का इन्तज़ार करते रहो। धीरज के साथ चलना मुनासिब है और जहाँ

१—लंबा अरसा। २—निगरानी करने वाला। ३—मज़बूत।

तक हो सके अपने आनंद और हालत को हज़्म करना, यानी गुप्त रखना चाहिये और किसी तरह निरास न होना चाहिये।

१२—ख़्याल करो कि जब हुज़ूर सतगुरु दयाल राधास्वामी आप बख़्शिश करने के लिये यहाँ आये, तो जो उस बख़्शिश के सच्चे माँगने वाले हैं, उनको ख़ाली नहीं रक्खेंगे। उन्होंने तो लोगों की ख़ातिरदारी करके उनको आप चरनों में लगाया और जो कि आप ही उनसे परमार्थ की दया माँगते हैं, उनको ज़रूर देंगे, पर सबको इस लायक़ बना रहे हैं कि अपनी दया उनके हिरदे में रक्खें। यह समय भजन का है, और भजन में भी तकलीफ़ ज़रूर मालूम होगी क्योंकि मैल कटता है, सफ़ाई होती है। जन्म जन्म की धूल और ग़ुबार[1] से हृदय रूपी मकान मैला हो रहा है। बड़े भाग कि सतगुरु मिले और उन्होंने चरनों में लगाया और अब आप राधास्वामी दयाल मकान को साफ़ करवा रहे हैं, ताकि सबको अपने दर्शन और दया से निहाल[2] करें। जब तक सफ़ाई होवे तब तक जल्दी और घबराहट नहीं चाहिये, पर बिरह की घबराहट अच्छी है। कर्मों के कटने में देर है, सो जितना जल्दी मुनासिब होगा काटेंगे और काट रहे हैं। कोई दिन में जब कुछ प्रेम झलकेगा, तब आनंद चरनों का प्राप्त होगा।

१३—यह बात ठीक है कि जब तक ताक़त न बख़्शी जावेगी, मौज पर नहीं रहा जा सकता है। सो जब मन घबरावे या बेकल होवे या रूखा फीका हो जावे, तो कुछ चिंता नहीं है। सतगुरु अंतरजामी सब जानते हैं, वे ऐसी हालतों से अपनी मेहर और दया में अंतर[3] नहीं करते हैं। बालक का स्वभाव है कि माता पिता से जब उसके मुआफ़िक़ कोई मतलब की बात न होवे तो रूठ जाता है और सुस्त हो जाता है, पर यह चाहिये कि उनका बालक बना रहे और जो रूठे तो उनसे, और प्रीति प्यार करे तो उनसे और लाड़ करे तो उनसे करे।

१—मैल। २—पूरी तरह संतुष्ट। ३—फ़र्क़।

१४–हुज़ूर राधास्वामी दयाल की बड़ी दया और मेहर है। और जोकि सब बातों में वे आप कर्त्ता और धर्त्ता हैं, कुछ डर लोगों की तान वग़ैरह का न करना बल्कि तान मारने वाले को अपना मेहरबान समझना, क्योंकि अनेक तरह की दुरुस्ती उन्हीं की तान से होती है। यह भी हुज़ूर राधास्वामी दयाल की निज[1] दया है। इसी से गम्भीरता प्राप्त होगी। और कोई बचन अहंकार या बेपरवाही या रंज का कभी किसी से न कहना, बल्कि क्षमा को अपना ख़ास बरताव समझना और जो क्षमा न होवे, तो समझो कि हमारे में कसर है और हम से कार्रवाई दुरुस्त नहीं हुई।

१५–प्रेमी को चाहिये कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया दिन दिन बढ़ाने के वास्ते सब की तान और निंदा सहे। लेकिन यह समझ हर वक्त नहीं रहती है। पर जब जब होश आवे, तब यही बिचारे कि तान लगाने वाले हुज़ूर राधास्वामी दयाल ने अपनी मेहर से मेरे गढ़ने[2] के लिये औज़ार मुक़र्रर किये हैं। अहंकार या किसी पर ज़ोर या किसी के बचन पर क्रोध न करे, और जो क्रोध आवे तो जितना बने अंदर में रोके और बिचार करके हटावे, यानी जहाँ तक हो सके बाहर उसको प्रगट कम करे और सबकी ख़ातिरदारी और दिलासा, जितना बन सके, अपनी तरफ़ से करे। आगे हुज़ूर राधास्वामी दयाल की मौज।

१६–सबको चाहिये कि सतगुरु के चरनों में प्रार्थना करके स्वरूप के ध्यान में सुरत लगावें। और जो शब्द में सुरत अच्छी तरह नहीं लगती, तो कुछ हर्ज नहीं है, स्वरूप का ध्यान विशेष करें। और जब उसमें भी मन तरंगें उठावे, तो सुमिरन सहित ध्यान करें, यानी मन से राधास्वामी नाम लिये जावें और दृष्टि और सुरत स्वरूप में लगावें। हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी दया से कुछ रस और शांति, जैसा मुनासिब होगा, बख़्शेंगे।

१—ख़ास। २—दुरुस्त करने।

१७–बेकली और घबराहट और अशांति मन के लिये बड़ी फ़ायदामंद है, पर सही नहीं जाती है। इसका नफ़ा पीछे मालूम पड़ता है। पर मन का यह हाल है कि बेकली और घबराहट में जल्दी भिच जाता है और दुखी होने लगता है, सो कुछ हर्ज नहीं है। हुज़ूर राधास्वामी दयाल अंतरजामी सब जानते हैं और हर एक की ताक़त की उनको ख़बर है। वे हर एक को उतनी ही बेकली बख़्शेंगे जितनी कि वह सह सके और आप ही सब तरह सम्हाल करते हैं, दूसरे की कुछ ताक़त नहीं है।

१८–भरोसा चरनों का दृढ़ रक्खो और कर्मों के कटने में मत घबराओ और धीरज लाओ। सब पर यह हालत गुज़रती है और जो जो सच्चा होकर चरनों में लगेगा, उसी के कर्म ज़रूर काटे जावेंगे और कर्म कटते वक्त थोड़ी बहुत तकलीफ़ ज़रूर होगी। सो उसको हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया जान कर सहो। जल्द शांति भी बख़्शेंगे। यह सब दया प्रेम और भक्ति और प्रतीति की बढ़ाने वाली है। इसको निज मेहर और कृपा जानो। बड़ा भाग है जिनको यह मिले। नहीं तो संसार अँधेरे में भटक रहा है और कर्म और भर्म में फँसता जाता है और अनेक तरह के दुख और सुख सहता है और फिर उनसे बेख़बर। और जो कोई डरता है उसके वास्ते सब तरह के सुख की तैयारी हो रही है। जो कुछ पिछले कर्मों का भोग है, वह बहुत जल्द और आसानी के साथ काटा जायगा, क्योंकि बिना कटे हुए उनका असर नहीं जायगा और परम बिलास चरनों का नहीं मिल सकता है।

दोहा

डर करनी डर परम गुरु, डर पारस डर सार।
डरत रहे सो ऊबरे, ग़ाफ़िल खाई मार॥

१९–जिस किसी सच्चे प्रेमी का यह हाल है कि जब किसी की भक्ति की बढ़ती का हाल सुनता है, तब ही अपनी ओछी हालत से

मिला कर सुस्त और फ़िक्रमंद हो जाता है, सो यह बहुत अच्छा है और यह निशान दया का है। इसी तरह इस जीव को ख़बर पड़ती है और अपनी हालतों को देखता है और अपने मत को चित्त से सुनता है और बिचारता है। ग़रज़ कि इसमें सब तरह की गढ़त[1] है, इसको दया समझो।

२०—जो वक्त ध्यान और भजन के बजाय स्वरूप सतगुरु के कुटुम्बी और मित्रों की सूरतें नज़र आवें, उसका सबब यह है कि वह स्वरूप अभी हिरदे में धरे हैं, आहिस्ता आहिस्ता निकल जावेंगे। हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी दया से सब तरह सफ़ाई करते हैं।

२१—हुज़ूर राधास्वामी दयाल सब तरह से जीवों पर दया कर रहे हैं। और दया के भी अनेक रूप हैं, जैसे उदासी तबीयत की भी एक तरह की दया है। हर एक को यह उदासीनता नहीं मिलती। इसमें भी कुछ भेद है। ऐसा नहीं होता कि हर वक्त तबीयत सुस्त रहे, पर किसी क़दर सुस्ती और उदासीनता रहने से बड़े फ़ायदे हैं।

२२—हुज़ूर राधास्वामी दयाल आप सबको अंतर में सम्हालते हैं, पर एक सतसंगी दूसरे सतसंगी का हाल देख कर जो अपनी समझ के मुआफ़िक़ कोई बचन समझौती का सुनावे, तो उस में कुछ हर्ज नहीं है। पर इतना कहना सब के वास्ते ठीक है कि हुज़ूर राधास्वामी दीनदयाल और समर्थ हैं और जिस जिस ने उनके चरनों की सरन सच्ची ली है, उसकी फ़िक्र और ख़बरगीरी वे आप करते हैं। पर उनकी दया की सूरतें अनेक हैं और वे सच्चे प्रेमी और बिरही को, जो निरख परख के साथ चलता है, अंतर और बाहर जल्द मालूम पड़ती हैं।

२३—जैसी हालत जिस किसी सच्चे प्रेमी पर जब तब गुज़रती है, वह हुज़ूर राधास्वामी दयाल की मौज और दया से है और उस

१—सुधार।

हालत में हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से आहिस्ता आहिस्ता तरक्क़ी परमार्थ की बख़्शते जावेंगे, यानी कोई दिन सुस्ती और बेकली और कोई दिन आनंद और मगनता[1]। यह दोनों हालतें संग संग चलेंगी। बेकली और घबराहट और सुस्ती ऐसी है जैसी सूरज की गर्मी, और शांति और आनंद, जो उसके पीछे प्राप्त होवे, वह ऐसा है जैसे बर्षा मेघ[2] की। इन दोनों का आपस में जोड़ और संग है, सो किसी को घबराना नहीं चाहिये। और बहुत जल्दी करना भी मुनासिब नहीं है, क्योंकि मनुष्य की जल्दी से कुछ कारज नहीं बन सकता है। हुज़ूर राधास्वामी समर्थ दयाल प्रेमी और दर्दी भक्तों की चाह के मुआफ़िक़ बहुत जल्दी काम बनाते हैं, पर इस दया की ख़बर धीरे धीरे मालूम पड़ेगी। शुरू में इसकी परख बहुत कम होती है।

२४–मन का क़ायदा है कि दर्शन के वास्ते बहुत जल्दी करता है और जबकि यह चाह ज़ाहिर में जल्दी पूरी नहीं होती, इस सबब से मन में संशय पैदा होता है। पर हुज़ूर राधास्वामी दयाल शब्द स्वरूप से हर एक जीव के सदा संग हैं, यानी उसके अंतर में मौजूद हैं। सतगुरु रूप से प्रगट दर्शन अक्सर नहीं देते हैं। और इसमें भेद है, नहीं तो दुरुस्ती और तरक्क़ी परमार्थ की रुक जाने का डर है, यानी आगे रास्ता जैसा चाहिये नहीं चलेगा और मन नीचे स्थान पर स्वरूप के दर्शन में संतोष करके मगन हो जावेगा और जो वे इस तरह पर जैसा जल्दी मन चाहता है दर्शन देकर ऊपर को खींचेंगे, तो अजब नहीं है कि इधर से टूट जावे या बेहोश होकर या मतवाला सा पड़ा रहे। इस वास्ते जैसा जैसा मुनासिब है, वे आप दया करके सच्चे परमार्थी का काम बनाते हैं। हर दम शुकराना उनकी दया का करना और प्रीति और प्रतीति चरनों में बढ़ाना चाहिये और जब घबराहट हो, उसको सहना और अपने मन की कचाई और मलीनता पर चित्त में शरमाना और पछताना और प्रार्थना के साथ दया और मेहर माँगते रहना मुनासिब है।

१—ख़ुशी। २—बादल।

और इस बात का चित्त में दृढ़ निश्चय और भरोसा रखना चाहिये कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल को हर एक की तरक्क़ी और दुरुस्ती, जो जो सच्चे होकर सरन में आये हैं, उनकी चाह से बिशेष[1] मंज़ूर है।

२५—मन की अजब हालत है कि यह चरनों में सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के सच्चा होकर नहीं लगता है और न सचौटी से बरताव करता है और दुनियाँ के भोगों की चाहों को नहीं छोड़ता, बल्कि उन्हीं को माँगता है। असल तो यह है कि जब तक कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर की मौज से इसको अंतर में ठेका और ठिकाना न बख़्शेंगे, तब तक यह मन डावाँडोल रहने में लाचार है। इसका बस नहीं चलता किधर लगे और यह किसी तरफ़ बिना लगे रह नहीं सकता। और जब तक कि उद्यम के काम में रहा कुछ याद न आई और जब उससे निश्चिंत हुआ तब क्या करे। जो हुज़ूर सतगुरु राधास्वामी दयाल की सेवा करना चाहे, जैसे पोथी का पाठ या नाम का सुमिरन या शब्द का श्रवन या स्वरूप का ध्यान, तो जब तक कि इसको उसमें रस और कुछ मज़ा न मिले और ठिकाना हाथ न लगे, तो कैसे लगे। और इसको भय और भाव ऐसा नहीं है कि सब काम और चाहें इधर की छोड़ कर प्यासे की तरह उधर को दौड़कर चरन में लिपट जावे। जो इस क़दर प्यास और चाह होती, तो कुछ मुश्किल न होती। जैसे हाकिम और रोज़गार के ख़ौफ़ से इधर घंटों बेख़बर होकर काम में लग जाता है, ऐसे ही चाहिये था कि सतगुरु और उनके चरन रस का ख़ौफ़ और शौक़ करके इधर भी लग जाता। पर असल में घाटा प्रेम और शौक़ का है, चाहे उसे शौक़ कहो चाहे ख़ौफ़। पर यह प्रेम सतगुरु की दात है। जो वे चाहें तो यह मन एक छिन में लग सकता है और सब कैफ़ियत उस वक्त प्राप्त हो सकती है, पर वास्ते प्राप्ति इस ख़ास दया के क़ाबिलियत यानी अधिकार चाहिये और नहीं तो

१—ज्यादा।

टक्कर मारा करे और चक्कर खाया करे, कुछ नहीं बन पड़ता है। इस वास्ते क्या कहा जावे, सब तरह क़सूर अपने भाग और शौक़ का है। हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया में कुछ संदेह नहीं है और जो चरनों में लगा रहा, तो यह कसर शौक़ और भाग की भी वे ही अपनी मेहर से एक दिन मिटा देवेंगे। उन्हीं का भरोसा रखना चाहिये और जो कभी अभ्यास के समय विशेष आनंद प्राप्त होवे, या कभी कोई सख़्त तकलीफ़ सिर पर आ पड़े, तो उसके बरदाश्त और हज़्म करने की ताक़त भी वे ही अपनी मेहर से बख़्शेंगे।

२६—हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया का भरोसा रक्खो। वे सब तरह सम्हालने वाले हैं और अब भी सब तरह से रक्षा कर रहे हैं और करेंगे। मत घबराओ, और जब कभी तबीयत को किसी क़दर तकलीफ़ होवे, उसको भी ख़ास दया समझो, क्योंकि यह कारख़ाना इसी ढंग पर है। इसमें बिना खैंचातानी मन के काम नहीं चलता, और इसमें भी दया संग है। इस क़दर तकलीफ़ नहीं होगी कि जिसकी बरदाश्त न हो सके, क्योंकि वे कभी बिना अपनी दया का हाथ लगाये हुए मन को नहीं ठोकते हैं। बेशक तबीयत बहुत घबराती है, पर उसमें फ़ायदा समझो। यह मन इसी तरह गढ़ा जाता है। और कोई दिन की यह तकलीफ़ है, हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से शांति भी बख़्शेंगे। थोड़े दिन सबर करो और जब तबीयत ज़्यादा घबरावे, तो हाल अपना अंतर में वक़्त भजन या ध्यान के हुज़ूर के चरनों में अर्ज़ करो। इसमें मत शरमाओ और न कुछ और ख़्याल करो, सब के मन का यही हाल है। और जब ज़्यादा अकुलाहट और बेकली होती है, तब घबराहट की बरदाश्त नहीं होती है। उस वक़्त पुकारने में आराम मिलता है। सो इसका कुछ हर्ज नहीं है। कर्त्ता धर्त्ता सब तरह से हुज़ूर राधास्वामी दयाल आप हैं। वे अपनी दया ज़रूर करेंगे, पर इस क़दर चाहिये कि चरनों की जिस क़दर याद बन सके और स्वरूप का जिस क़दर ध्यान हो सके और नाम का सुमिरन और शब्द का श्रवन जिस क़दर हो सके, इसमें

लगे रहो। और जो मन तरंगें बेफ़ायदा उठावे और तुम्हारा कुछ बल पेश न जावे, तो ख़ैर। पीछे इसके जो पछतावा होता है, वही उसकी सज़ा और दवा है। इसी तरह यह मन दंड पाते पाते आहिस्ता आहिस्ता दुरुस्त हो जावेगा। यह भी हुज़ूर राधास्वामी दयाल की एक तरह की मौज मन के गढ़ने[1] की है।

२७—यह मन बेकली से बहुत घबराता है और जैसी घबराहट है, ऐसी तेज़ चाह दर्शन की उसको नहीं है। जो यह होवे, तो चित्त में वैराग्य और उदासीनता समाई रहे, और जब चरन और स्वरूप और नाम में लगे, तब ही उसको रस आने लगे। और गुनावन और तरंगें हट जावें, तो घबराहट काहे को[2] आवे। पर यह मन तरंगें बुरी उठाये बग़ैर नहीं मानता है, इस से रस नहीं मिलता है। और जब अपनी ऐसी हालत को देख कर और समझ कर पछताता है, उसी की घबराहट पैदा होती है। सो घबराओ मत, हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया से इसकी दुरुस्ती करेंगे, मगर आहिस्ता आहिस्ता। एक रोज़ में इस मन के टुकड़े और नाश करना मंज़ूर नहीं है, नहीं तो शरीर का काम जैसा चाहिये नहीं देवेगा। इस वास्ते सहज सहज इस काम का होना मुनासिब है।

२८—दुनिया के कारख़ाने देह के हैं, और यहाँ स्थूल मन कार्रवाई करता है। दुनिया की नर्मी और सख़्ती या आराम और तकलीफ़ में यह होशियार होकर काम पूरा देता है, पर परमार्थ में इस मन के टुकड़े होते हैं। इस वास्ते परमार्थ का इसको शौक़ कम है। अलबत्ता सुरत को प्रेम है। सुरत सतगुरु के बचन को सुनकर चाव उठाती है, पर जोकि अभी मन के आधीन है, इस सबब से यह मन उसको जैसा कि चाहिये परमार्थ के काम में लगने और तरक्क़ी करने नहीं देता है। और जब अभ्यास का वक्त आता है, तब आलस और कमी शौक़ की मालूम होती है। पहले तो यह मन परमार्थ के बचन और इरादे को

१—सुधारने। २—काहे को—क्यों।

भुला ही देता है और जो याद भी रहे, तो उसमें सुस्ती पैदा करता है, यानी उमंग के साथ उनको नहीं क़बूल करता है और न उसमें लगता है और परमार्थी ख़र्च के मुआमले में भी ऊँच नीच सुझाता है। जब मन ऐसा निर्बल है, तब ऐसे वक्त में अगर कोई बाबत परमार्थ के तान मारे, तब और भी गिर जाता है और जितना करना चाहता था, फिर उतना भी तन मन धन परमार्थ में नहीं लगा सकता है। यह सबब सबकी शिकायत का है, थोड़े दिन ऐसी ही हालत रहेगी। जब प्रीति निज मन में अच्छी तरह धस जावेगी, तब प्रेम की तरक्की शुरू होगी और तब वह प्रेम किसी क़दर ठहराऊ होगा।

२९– जो कुछ ऊपर लिखा गया, यह काम सहज नहीं है। इस वास्ते भरोसा राधास्वामी दयाल की दया और मेहर का पक्का करके धीरज के साथ कार्रवाई करो और हाल में[1] जो तकलीफ़, घबराहट और बेकली वग़ैरह की, आवे या कभी कभी रस न मिले, तो उसको सब्र के साथ झेलो। इसी सबब से दुनियाँ में बहुत कम अधिकारी परमार्थ के हैं, यानी इस तकलीफ़ और घबराहट की बरदाश्त नहीं हो सकती है। और मन जल्दी करता है, क्योंकि सब तकलीफ़ इसी पर पड़ती है और जो जल्दी काम बनता न देखे, तो आलस लाकर छोड़ने को तैयार हो जाता है, या संशय उठा कर न्यारा हो जाता है, या निराश होकर घबरा जाता है और सुस्ती ले आता है। ऐसे ही बहुतेरे लोग रास्ते में रह गये और थोड़ा बहुत काम शुरू में कर के आगे सहने की ताक़त न लाकर, उसी को पूरा समझ कर सरन पर ठहर गये कि अब हमारे उद्धार में तो कुछ संदेह नहीं रहा, मेहनत और तकलीफ़ की क्या ज़रूरत है। और इसमें कुछ संशय नहीं कि राधास्वामी दयाल अपनी दया से अंत समय पर उनके जीव का भी कारज करेंगे, यानी किसी दर्जे का सुख स्थान देंगे। पर पूरा काम जब ही बनेगा, जब सब तरह की तकलीफ़ मन की अपने अंतर में बरदाश्त करके भक्ति और अभ्यास करे जायगा।

१—इस वक्त।

३०—जो जीव बड़भागी परमार्थ के हैं, उनको बिना प्राप्ति दर्शन या रस के अंतर में चैन नहीं पड़ता है और वे, चाहे जैसी तकलीफ़ और घबराहट आवे, सबको सतगुरु की दया और मेहर से सहते हैं और अपना इरादा पहुँचने धुर पद का और वहाँ जाकर सत्तपुरुष राधास्वामी के दर्शन और बिलास के प्राप्त होने का नहीं छोड़ते हैं। और फिर वही जीव आहिस्ता आहिस्ता एक दिन गुरुमुख बन जावेंगे; बल्कि उनकी साध गति तो पहले ही से शुरू हो जाती है पर स्थान ज़रा नीचा रहता है, सहज सहज चढ़ाई होती है। और आगे सतगुरु दयाल की मौज है, चाहे एक जन्म में धुर पद बख़्शें और चाहे दो जन्म में, यानी पहले जन्म में दसवाँ द्वार और दूसरे जन्म में निज स्थान में पहुँचावें। और यह दोनों स्थान बड़े हैं और पहुँचनेवाले को बड़ा आनंद और सब तरह की निर्मलता प्राप्त होती है और दोनों स्थानों में सतगुरु का संग मिलता है। अब हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया और मौज का हर दम शुक्र करना चाहिये।

३१—घबराहट और बेकली चलाने वाली और रास्ता काटने वाली है और उमंग और शौक़ बढ़ाने के वास्ते यह सतगुरु ने मेहर करके दी है। अलबत्ता वक्त़ घबराहट के तबीयत को बहुत बेचैनी होती है और दया और मौज, जो गुप्त है, नज़र नहीं आती है, बल्कि उसका उलटा मालूम होता है। पर जब उसका चक्कर हट जाता है, तब मालूम होता है कि यह घबराहट फ़ायदेमंद थी। और जो यह बात किसी को न मालूम पड़े, तो समझना चाहिये कि इस घबराहट के पीछे ज़रूर दया आवेगी। यह घबराहट दया का अगुआ है, फिर अपने प्यारे राधास्वामी दीन दयाल की भेजी हुई घबराहट को बुरा न जानना चाहिये। कोई दिन यह बेक़रारी[1] ज़्यादा तपन[2] के साथ रहेगी और फिर आहिस्ता आहिस्ता यह तपन कम होती जावेगी और घबराहट में कुछ मज़ा मिलने लगेगा।

१—बेचैनी। २—जलन, कष्ट।

३२—ऐसे घबराहट के वक्त़ जो बन सके तो हुज़ूर राधास्वामी दयाल के स्वरूप का ध्यान या पहले स्थान के स्वरूप का ख़्याल और नाम का सुमिरन मन से करो और उनकी समय समय की दया और लीला की याद थोड़ी बहुत प्रीति और प्रेम के साथ मन में लाओ, तो उसमें कुछ फ़ायदा मालूम होगा। और जो यह न हो सके तो सिर्फ़ स्वरूप का या नाम का ख़्याल करो ऐसा समझ कर कि वे ही मालिक कुल हैं, चाहे जैसे रक्खें, और वे अपनी दया से ज़रूर सहारा देंगे और जो घबराहट के वक्त़ परमार्थी ख़्याल उठें, उनको मत रोको। जो थोड़ा बहुत भी मन चरनों में लगा रहेगा या उधर का ख़्याल भी रहेगा, तो भी किसी क़दर फ़ायदा होगा।

३३—सतगुरु के चरनों में प्रार्थना करना वास्ते इसके कि किसी क़दर सहारा इतना बख़्शें कि थोड़ी बहुत शांति आवे, ज़रूर चाहिये। पर इतना समझ लो कि जब तक सफ़ाई अंतरी नहीं होगी, तब तक पूरी शांति नहीं हो सकती, क्योंकि जब तक सूक्ष्म मन के अंग बाक़ी हैं, तब तक पूरी शांति का आना नुक़सान करता है। थोड़ी तड़प और बेकली और बिरह का पैदा होते रहना कभी कभी वास्ते सफ़ाई और तरक्क़ी के ज़रूर है। इस वास्ते घबराओ मत और जल्दी मत करो, सतगुरु अपनी मेहर से, जितना सहारा मुनासिब, है अंतर में आप सब को देते हैं और किसी क़दर तड़प और बिरह भी लगाये रखते हैं कि जिसमें काम बनता जावे, पर इतनी नहीं कि जिस में तकलीफ़ होवे या उसकी बरदास्त न होवे, सिर्फ़ इस क़दर कि कभी कभी मन उदासीन हो जावे और कभी कभी परमार्थ का आनंद भी आवे। मतलब यह कि इन दोनों हालतों का थोड़ा बहुत दौरा होता रहेगा।

३४—बग़ैर थोड़ी तड़प और बेकली और घबराहट के कुछ काम नहीं बनता है, और यह चीज़ें सतगुरु केवल उन्हीं लोगों को बख़्शते हैं जिन पर दया है और जिनको इसी जन्म में सम्हालना मंज़ूर है और चरनों में निज करके लगाना है। और वैसे तो सब अपने अपने दर्जे पर मेहर के लायक़ हैं, पर यह मेहर निराली है और इस मेहर की

झटक भी वही झेल सकते हैं जिनको वे अपनी मौज से ताक़त बरदाश्त ऐसी हालत की देवें, नहीं तो दूसरे तो घबराकर ऐसी हालत से हट जाना या उस हालत का दूर होना चाहेंगे। और फिर ऐसों को पहले तो ऐसी तेज़ हालत प्राप्त ही नहीं होती है, और जो होय भी, तो शायद कुछ थोड़ी देर के वास्ते। पर उसकी भी उनसे बरदाश्त नहीं होती और वे नहीं चाहते कि फिर उनकी ऐसी हालत होवे। इस वास्ते सतगुरु दयाल उन पर इस तरह की बख़्शिश भी नहीं करते, यानी आगे के वास्ते छोड़ देते हैं। और जिन पर निज मेहर है, उनको चाहे तकलीफ़ घबराहट और बेकली और तड़प की मालूम पड़े, पर वे बिना ऐसी हालत के अपने तईं[1] ख़ाली देखते हैं और चाहते हैं कि या तो दर्शन का आनंद मिले और नहीं तो बिरह की खटक जारी रहे। इस तरह तो उनको चैन होता है, नहीं तो बेचैनी रहती है।

३५—यह सही है कि शुरू में बिना बाहर के सहारे के चलना कठिन है, पर यह भी समझना चाहिये कि कब तक बाहरी चाल चलेगी। कुछ अंतर में भी ज़ोर देना और उसके वास्ते तन मन और इन्द्रियों को रोकना ज़रूर है, क्योंकि जब तक यह न होगा, अंतरी सफ़ाई न होगी और जब तक अंतरी सफ़ाई प्राप्त नहीं, तब तक इस जीव की प्रीति का भरोसा नहीं हो सकता। थोड़े दिन की घबराहट और बेकली होगी और फिर सहज सहज हल्की हो जावेगी, और खटक भी साधारण रह जावेगी। इस वास्ते पहले सफ़ाई मन की करना और जैसे बने तैसे उसको ज़ोर देकर सतगुरु राधास्वामी दयाल के चरनों में लगाये रखना साथ इन दस जुगतियों के मुनासिब मालूम होता है :—

(१) पोथी का पाठ करना समझ कर, (२) नाम का सुमिरन करना (३) ध्यान सतगुरु के स्वरूप का करना (४) चिंतवन[2] करना सतगुरु की लीला और बिलास का, (५) धुन्यात्मक नाम यानी शब्द का श्रवन[3] अंतर में मन और सुरत से करना, (६) सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के मत की चर्चा सुनना या आप करना, (७) सतगुरु राधास्वामी दयाल

१—अपने तईं—अपने आपको। २—ख़याल। ३—श्रवन करना—सुनना।

की बानी का श्रवन करना, (८) नित्य सोच और फ़िक्र करना कि कैसे मेरे जीव का गुज़ारा सतगुरु राधास्वामी दयाल करेंगे और अपने को निपट नीच और नालायक़ देखना और अपने औगुनों को निरखते चलना, (९) अपने मन और इन्द्रियों के हाल और चाल पर, जितना हो सके, निगाह रखनी कि किस किस पदार्थ और तरंगों और गुनावन में बहते रहते हैं और जितना हो सके उनको रोकना, (१०) शरमाना और पछताना और झुरना अपने मन और इन्द्रियों के हाल और चाल देखकर और मन ही मन में प्रार्थना करना सतगुरु राधास्वामी दयाल के चरनों में सच्चे दुखी होकर वास्ते प्राप्ति मेहर और दया के, और कभी कभी सुनाना थोड़ा सा अपने मन के हाल को प्रेमी और मेली सतसंगिन या सतसंगी को, जो सच्चा परमार्थ कमा रहे हैं और अपने से भक्ति में ज़बर[1] हैं, और करना उस जतन का जो वे अपनी परख और पहचान से बतावें।

३६—जो कोई सच्ची लाग और दर्द सतगुरु के चरनों में वास्ते प्राप्ति दया के रखता है, वह यह सब काम, जिनका ऊपर वर्णन किया गया है, थोड़ा बहुत ज़रूर करेगा और उसका फल भी मौज से अपने अंतर में देखता जावेगा। और सबको चाहिये कि इन दस जुगतियों में से, जो जिस वक्त और जिस क़दर बन आवे, मन से करना शुरू करें, यानी मन को उस वक्त थोड़ा बहुत नीचा डालकर और उमंग और तड़प लेकर अभ्यास करें। तब कुछ न कुछ दया सतगुरु राधास्वामी की ज़रूर मालूम होगी।

३७—कुल मालिक और सर्व समर्थ और कुल दयाल राधास्वामी हैं, सिवाय उनके और कोई नहीं है जो कुछ भी कर सके। जो कुछ करते हैं और जो कुछ करेंगे, सतगुरु राधास्वामी दयाल अपनी मौज और दया से करेंगे। उनकी दयालुता अपार है, पर सेवक अभी पूरी दया के लायक़ नहीं है, और बेफ़ायदा जल्दी की मौज नहीं है क्योंकि इसमें हर्ज और नुक़सान और तकलीफ़ नज़र आती है। उनकी दया और

१—बढ़ कर।

मेहर में कुछ संदेह और कसर नहीं है। वे रोज़ बरोज़ काम बनाते जाते हैं, और वे अपनी मेहर से आहिस्ता आहिस्ता सब काम पूरा करेंगे, इस बात की मन में प्रतीति करके राधास्वामी दयाल के चरनों का आसरा और भरोसा रक्खो और इस भरोसे को खूब पक्का करके चरनों को मज़बूत पकड़ना चाहिये। और जो दर्द सच्चा है तो आसरे और भरोसे को भी वे अपनी दया से पक्का करा देंगे, पर आहिस्ता आहिस्ता।

३८—सेवक के मन में सच्ची चाह सत्तपुरुष राधास्वामी के चरनों की प्राप्ति की चाहिये। जो वह चाह किसी वक्त कम या ज़्यादा हो जावे या किसी सबब से किसी वक्त हल्की हो जावे, तो कुछ हर्ज नहीं है। जो सच्ची है तो तड़प के संग फिर जाग उठेगी और इसी चाह के संग सत्तपुरुष राधास्वामी के चरनों में प्रीति और प्रतीति जागेगी और यही चाह उनकी मेहर से बढ़ती हुई और प्रतीति और प्रीति को पकाती हुई एक रोज़ चरनों में मिला देवेगी। और यह चाह और तड़प खास निशानी सतगुरु की मेहर और दया की है। जिस किसी को मिली है वही बड़भागी है और इसमें किसी तरह का संशय नहीं है कि उसका काम अबेर और सबेर का ख़्याल छोड़ कर ज़रूर एक दिन पूरा हो जावेगा।

३९—जब जब कोई दिन सुस्ती के आवें, तो सब्र और बरदाश्त करके मेहर और दया माँगते रहो और जब दिन आनंद और बिलास के आवें, तब भी उनकी मेहर और दया का शुकराना अदा करो। और इसमें बिलास और सुस्ती अंतर और बाहर दोनों समझ लेना। सतगुरु राधास्वामी ऐसी हालत, जब जब और जैसा जैसा मुनासिब होता है, आपही बख़्शते हैं, पर सेवक का मन जल्दी करता है और घबरा जाता है, सो इसके भी सम्हालने वाले वे आप ही हैं।

४०—ऐसे ऐसे बंधन और अटकें और क़ैदें पड़ी हुई हैं कि जैसा मन चाहता है कोई भी काम नहीं बनता है और कुछ अभी नहीं,

हमेशा से ऐसी मौज देखने में आई है कि जिस क़दर कोई मन से इरादा निकलने का करे, उसी क़दर ज़्यादा बाहरी बखेड़े बढ़ते जाते हैं और चाहे वे बखेड़े और रगड़े[1] असली होवें चाहे केवल देखने मात्र के, पर इस जीव को दुख देने और तंग करने और सुस्त रखने और कभी कभी निरास करने और बिलकुल इसका बल तोड़ने को बहुत भारी मालूम पड़ते हैं। और जो चाहें कि इन झमेलों के साथ तोड़ फोड़ कर चरनों में लिपट जावें, तो ऐसा भी नहीं होता और जो इधर ही के काम को पहले पूरा करना चाहें, तो वह भी, जिस तरह और जैसा जल्दी इसका मन चाहता है, नहीं बन पड़ता बल्कि और दुख देता है और घबराहट को बढ़ाता है। यह हालत इस जीव की है कि चाहे जितना जतन करे, मन के घाट से नहीं हटता और बारंबार उधर ही को झोका खाता है। इसमें बड़ी लाचारी है, पर इसमें भी कुछ मसलहत सफ़ाई मन और बुद्धि की और तोड़ने उनके बल और भरोसे की है।

४१—सतगुरु दयाल परम पुरुष पूरन धनी राधास्वामी की दया बड़ी भारी है, पर वे क्या करें। इस जीव के बंधन मन और तन और इन्द्रियों के संग बड़े गाढ़े[2] हैं और जुगानजुग से बँधे चले आये हैं और पुरानी आदत उन्हीं के संग बरताव की ज़बर पड़ रही है और जोकि वे अपनी मेहर और दया से छुड़ाते हैं, पर यह छूटने में भी महा दुखी होता है और मरा जाता है और टूटने को तैयार होता है। तब वे फिर छोड़ देते हैं और इसकी हालत पर दया करते हैं और आहिस्ता आहिस्ता निकालना मुनासिब समझते हैं, एक दम के निकालने के लायक़ जीव को नहीं देखते। और ज़बरदस्ती करना मंज़ूर नहीं है, अलबत्ता काम बनाना मंज़ूर है और यह काम आहिस्ता आहिस्ता बन सकता है। जैसा कि जीव बहुत मुद्दत से भूला और भरमा हुआ है, ऐसे ही आहिस्तगी के साथ इसकी भूल और पुरानी आदतें दूर होवेंगी।

१—झगड़े। २—गहरे, मजबूत।

४२—और मालूम होवे कि काम के बनाव में किसी तरह का संदेह नहीं है, क्योंकि हुज़ूर राधास्वामी दयाल ने अपनी दया से सब सेवकों के हृदय में अपनी प्रीति और प्रतीति थोड़ी या बहुत बख़्शिश कर दी है। और जोकि मन अनेक रंगों की तरंग में बहता है, पर जो हुज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों की थोड़ी बहुत प्रीति सुरत और मन में धरी है, उसका भी ख़्याल और सोच उसको अक्सर आता रहता है।

४३—ज़्यादा बड़भागी वे हैं कि जिनके सदा तड़प और बेकली हृदय में छाई रहती है और मन को दूसरी तरफ़ जाने नहीं देते, और जो जाता भी है तो उसको वहाँ ठहरने नहीं देते और कुरंग[1] की तरंगों[2] के उठाने में उसको धिक्कार देते रहते हैं। यह सब दर्जे सतगुरु के चरनों की प्रीति और बिरह के हैं। जिसको जितनी बख़्शिश है, उतना ही उसको अपने मन में फ़ायदा और असर उसका मालूम होता है। पर जो एक दम और बिलकुल मन के घाट और बाट से न्यारा होना चाहता है, तो यह जब तक कि अभ्यास करके पिंड से न्यारा न होगा, तब तक नहीं हो सकता। इस वास्ते जल्दी और घबराहट नहीं चाहिये।

४४—किसी क़दर बेकली और घबराहट और बेचैनी और मन का किसी और काम में अच्छी तरह न लगना और बार बार सतगुरु के चरनों की चाह और दर्शनों की बिरह उठाना और उदासीन रहना, यह सब निशान सतगुरु राधास्वामी दयाल की मेहर और दया के हैं और इसी से ज़ाहिर होता है कि जिन लोगों की ऐसी हालत है, उनके काम को वे जल्दी से बना रहे हैं।

४५—और जिनको अंतर में शांति और रस इस क़दर मिल जाता है कि जब चाहें जब थोड़ा बहुत चरन रस लेवें, उनकी हालत में इतना भेद होगा कि उनको बिरह और बेकली अंतरी

१—ग़लत तरह की। २—ख़्यालों।

होगी, पर हर वक्त नहीं। जब जब मौज से थोड़ी भी होगी, वह बहुत काम थोड़ी देर में बना लेगी और मेहर और दया उस दर्जे के मुआफ़िक़ प्राप्त होती जावेगी।

४६—और जिनको कि अभी खटक कम है और जब जब सतसंग में आवें, उस वक्त बचन सुनकर और औरों की हालत देख कर खटक और बेकली पैदा हो जाती है या दुख के वक्त याद आ जाती है और कुछ देर ठहरती है और फिर हल्की हो जाती है या भूल जाती है, वह भी अच्छे हैं। आहिस्ता आहिस्ता उनका काम भी बन जावेगा और खटक रोज़ बरोज़ बढ़ती जावेगी। और मालूम होवे कि यही खटक और यही बिरह और यही बेकली और यही सोच और फ़िक्र और यही प्रीति जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया है सतगुरु राधास्वामी दयाल की मेहर और दया की दात का निशान है। इसीसे उद्धार की सूरत रोज़ बरोज़ नज़र आवेगी। इसमें किसी तरह का संदेह नहीं है।

४७—जिनके मन में ऐसी चाह ज़बर है कि इसी देह में जिस क़दर जल्दी होवे तन मन से न्यारे होकर सतगुरु के निज स्वरूप का दर्शन और चरन रस लेवें, उनकी बिरह और बेकली और खटक ठहराऊ होगी, और कोई पदार्थ संसारी या खुशी वग़ैरह इस तरफ़ की उनकी बिरह को हल्का और उदासीन अवस्था को ढीला नहीं कर सकेगी और किसी तरह की समझौती उनके जतन और मेहनत को (वास्ते मन तन से न्यारे होने के) रोक नहीं सकेगी। उनके दिल के अंदर यानी अंतर के अंतर फ़िक्र और सोच बैठ गया है और अपनी ताक़त के मुआफ़िक़ जतन और तदबीर से नहीं चूकते, और तन मन और इन्द्रियों के भोग उनको दिल से बुरे लगते हैं और चाहे वक्त मिल जाने के भोग भी लें, पर फिर फ़ौरन् पछताते हैं और घबराते हैं और अपने मन पर बारम्बार धिक्कार देते हैं, आगे को बचने के लिये प्रार्थना करते हैं और अपना ज़ोर भी सतगुरु की दया का भरोसा रख कर लगाते हैं और अंतर में सिवाय

एक चाह सतगुरु राधास्वामी के चरनों के दर्शन की और दूसरी चाह नहीं रखते और जो दूसरी चाह उठती भी है, तो ज़बर और ठहराऊ नहीं होती और जब उठती है तब उसको बुरा समझ कर फ़ौरन् रोकते हैं और हटाते हैं और शरमाते और पछताते हैं और उसके बिलकुल दूर होने के लिये प्रार्थना चरनों में करते हैं और सतगुरु के चरनों की प्रीति के आगे कोई प्रीति ज़बर नहीं रखते हैं या बिलकुल नहीं रखते हैं। ऐसे बड़भागी जो जीव हैं, वे ज़रूर इसी देह में दर्शन पावेंगे। इससे यह मतलब नहीं है कि वे फ़ौरन् धुर मुक़ाम पर, जो राधास्वामी धाम है, पहुँच जावेंगे, पर यह कि वे ज़रूर मन के घाट से किसी क़दर न्यारे होकर सत्तपुरुष राधास्वामी के चरनों का रस इस क़दर पाते जावेंगे कि उनको शांति आ जावेगी और बेकली और निरासता नहीं रहेगी और उनको आगे का रास्ता साफ़ और खुला हुआ दीखने लगेगा और सब अटक और भटक मिट जावेगी और सब बैरी और बिरोधी रास्ते के हार जावेंगे और सतगुरु दयाल की मौज उनको मालूम होने लगेगी और फिर कोई तरह का संदेह मन में अपने उद्धार की निस्बत नहीं रहेगा और सत्तपुरुष राधास्वामी के चरनों की प्रीति और प्रतीति इस क़दर गहरी और गाढ़ी उनकी मेहर और दया से हो जावेगी कि फिर उनकी चाह मौज के संग मिल जावेगी। अब इसमें भी सतगुरु की मौज है। चाहे जिस मुक़ाम तक उनको ले जावें और चाहे जिस मुक़ाम पर रक्खें, पर वे जहाँ रहेंगे, हुज़ूर के चरन और दर्शन के संग रहेंगे और उसी रस और आनंद में मगन रहेंगे और एक दिन संसार से बेपरवाह और काल से निडर हो जावेंगे।

४८—सतगुरु के चरनों में बिरह और प्रीति लाना और उसको बढ़ाना और उनकी मेहर और दया की प्रतीति रखना सबको चाहिये। जो कुछ करेंगे वे आप करेंगे, इस जीव की कुछ ताक़त नहीं है। पर इसके मन में चाह का होना और उसको बढ़ाना और इसी सोच और फ़िक्र में रहना और जतन में लगे रहना और तन मन और

इन्द्रियों से बच के चलना और नित्य प्रेम और उमंग नवीन उठाना बहुत ज़रूर है और यही निशान सतगुरु की मेहर और दया का है। जिसमें यह बातें पाई जावें और जिसको यह बातें प्यारी लगें और जो इन्हीं बातों को प्राप्त करने के सोच और फ़िक्र में रहे, तो जानो कि वही मेहरी है और उसका काम वे बना रहे हैं और एक दिन उनकी दया से उसका सब काम पूरा हो जावेगा।

४९—जो कोई तन और मन और इन्द्रियों से प्यार रखते हैं और उनके भोग और रस की चाह रखते हैं और उसको नित्य बढ़ाते हैं और जो वह चाह पूरी हो तो ख़ुश होते हैं और जो पूरी न होवे, तो दुखी होते हैं, और जो कोई उनके उस भोग के मिलने में या रस लेने में बिघ्न डाले, तो उसको अपना बैरी समझकर उससे लड़ते हैं और उसको बुरा भला कहते हैं और सतसंग और भजन और सुमिरन और ध्यान ऊपरी करते हैं, या वक्त़ भजन और सतसंग के ऊँघते हैं या सो जाते हैं, या गुनावन मन और इन्द्रियों के भोगों की उठाते हैं और यह नहीं जानते कि हम गुनावन में बहते रहते हैं और नित्य तरंगें संसार के बढ़ाने की मन में उठा करती हैं और उन तरंगों में इन्द्री रस और मान रस लेते हैं और उसी में मगन होकर अपने को परमार्थी समझते हैं और यह ख़्याल करते हैं कि जो हम कर रहे हैं यही बहुत है और हमारा काम पूरा है, ऐसे जीव अभी नीचे की सीढ़ी पर हैं। जो सतसंग में पड़े रहेंगे, तो आहिस्ता आहिस्ता सतगुरु दयाल की मेहर और दया से उनका भी कारज बनना शुरू हो जावेगा, पर अभी उनकी सीढ़ी बहुत नीची है। और इसी सबब से उनका मन सतसंग और भजन और ध्यान में नहीं लगता है, क्योंकि उनको आदत इन्द्री भोग और मान बड़ाई की पड़ रही है। जहाँ यह भोग मिलें, सेवा और प्रीति करने को तैयार हो जावें और जब यह भोग न मिलें या कोई तान का बचन कहे और उनके दोष खोलकर कहे, तो रूठ जावें और सतसंग छोड़ने को तैयार हो जावें और सेवा वग़ैरह सब छोड़ देवें और संत मत पर तान मारें और अनेक तरह के भर्म उठा कर उसको

सच्चा न समझें और सुरत शब्द के अभ्यास और सतगुरु के ध्यान को भी सटपट[1] और झूठी बात समझ कर झटपट बेपरतीत हो जावें और सतगुरु और सच्चे सतसंगियों में बुराई देखें। फिर ख़्याल करो कि ऐसे जीवों को परमार्थ कैसे मिले? जिस रोज़ भाग से मन सतसंग में लग गया और बचन का रस आया, उस रोज़ बड़ी बेकली और घबराहट वास्ते प्राप्ति प्रेम और प्रतीति और भजन के दिखलाने लगे और फिर कुछ नहीं, और ज़रा भी फ़िक्र और सोच मन में न बैठा और न मन की हालत को बदला। फिर ऐसी बातें बनाने से क्या फ़ायदा? बल्कि वे जीव मूर्ख हैं और सच्चे परमार्थियों की हालत को देखकर सतगुरु पर तान मारेंगे कि उन पर तो कृपा करते हैं और हम पर नहीं करते, सतगुरु के यहाँ भी दुभाँति[2] है और अपनी नालायक़ी को ज़रा नहीं बिचारेंगे और सतगुरु को दोष लगावेंगे।

५०—और मालूम होवे कि तान का बचन ऐसे जीवों पर लगाना या उनका औगुन दिखाना जो ऊपर लिखा है यह है कि जब कोई उनके मन की चोरी खोल देवे या जो काम वे करते हैं कि जो सच्चे परमार्थी को नहीं करना चाहिये और वह उसको प्रगट कर देवे या उनको गहरा भोग उनके मन के मुआफ़िक़ उनके इन्द्री रस का न देवे या उस भोग की निंदा करे या उसको बुरा बतलावे, वह बातें उनके मन को जला कर तुरंत भड़कावेंगी और कुछ अचरज नहीं कि लड़ने लगें और रूठ कर निंदा करते फिरें और बेमुख हो जावें। और जो कोई उनको मान और इन्द्री रस देवे और उनके मन की सी बोले और उनकी सेवा वग़ैरह की तारीफ़ करे, तो बहुत मगन होकर दूनी सेवा करें और तारीफ़ करने वाले की महिमा करें और उसके सेवक बन जावें। यह हालतें मन की हैं और बिचारने के लायक़ हैं। और किसी का हाल न देखना चाहिये। यह सब बातें अपने ही मन पर घटाना और अपने मन की दुरुस्ती करना मुनासिब है। और जिसको सच्चा दर्द है, वह सिर्फ़ अपनी तरफ़ देखेगा। और

१—सटर पटर, तुच्छ। २—दो तरह का बरताव।

दूसरे पर तान तो जब मारे जब अपनी गढ़त[1] पूरी पूरी हो गई हो और जब पूरी गढ़त हो जावेगी, तब किसी पर तान नहीं मारेगा बल्कि दया और प्यार से समझावेगा।

५१—सबको चाहिये कि हर एक अपने अपने मन को निहारे और जो ऐसे स्वभाव उसमें होवें जो सतगुरु से मिलने में विघ्न डालते हों और चरन रस न लेने देते हों, उनको हुज़ूर राधास्वामी की दया का भरोसा रखकर आहिस्ता आहिस्ता दूर करने के जतन में लगे रहना और सब के साथ मित्र भाव और सतगुरु के चरनों में प्रेम भाव रखना चाहिये। और सतसंग से किसी को हटाना नहीं चाहिये, पर उसकी दुरुस्ती सतगुरु की मौज और दया का आसरा लेकर प्यार से करना चाहिये और जो न माने, तो उसके साथ हठ और ज़िद न करना चाहिये और जो बिलकुल अनधिकारी है, वह कोई कारण करके आप ही हट जावेगा।

५२—जो कोई यह कहे कि अंतर में गति नहीं और बाहर कोई सहारा मिला नहीं, तो कैसे जीव का कारज बने, यह बात तो दुरुस्त है पर बिचार करना चाहिये कि जब तक बाहर सहारा इसके पास मौजूद रहेगा, यह कभी अंतर में पूरा पूरा चित्त न लगाएगा क्योंकि आलसी अंग मन का है। जो चीज़ चाहता है, आसानी और जल्दी और आराम के संग चाहता है। सो जब यह जीव सतगुरु के पास मौजूद है, तो इसको दर्शन और बचन और सतसंग बहुत आसानी और जल्दी के साथ, जब जब मन चाहे और तड़प उठे, मिल जाता है और उसमें शांति और संतोष हासिल हो जाने पर दूसरी करतूत की मन में ज़रूरत नहीं रहती है। और यह सच है कि जब यह जीव सतगुरु के पास मौजूद होता है तो उस वक्त मुनासिब है कि जिस क़दर बने उनकी सेवा और सतसंग और दर्शन करे, भजन को उस वक्त में गौण रक्खे और उनके ही चरनों में प्रीति और प्रतीति बढ़ावे। और जब कि उसकी प्रीति पक्की और सच्ची हो जावेगी, तो फिर भजन

१—सुधार।

भी सहज हो जावेगा। और जब संत सतगुरु से अलग हुआ तब उसको आदत के मुआफ़िक़ जल्दी दर्शन चाहिये, नहीं तो घबराहट होती है। मन पर ज़ोर देकर अंदर में लगाने में उसको तकलीफ़ होती है और जो लगता है, तो फ़ौरन् दर्शन चाहता है और नहीं तो छोड़ देता है। सो यह बात दुरुस्त नहीं है, क्योंकि सतगुरु ने पहले अपने स्वरूप में प्रीति लगवाई और उसमें पकाया और जब देखा कि यह उसमें किसी क़दर ठहर गया, अब उसको अंतर में लगाना चाहते हैं। सो यह बचन कोई कोई जीव कम मानते हैं, पर जो अधिकारी हैं वह सहज में भजन में लग जाते हैं और अंतर का रस लेते हैं।

५३—मन की आदत है कि एक काम जिस तरह से करता आया है वैसे ही उसको बिना तकलीफ़ के कर सकता है और जो उसमें कुछ उलट पलट होवे तो घबराता है। सतगुरु के आगे यह मन अपनी आदत के मुआफ़िक़ बाहर सीधा चलता है, यानी बाहर एक चित्त होकर दर्शन करता है और बचन सुनता है। और जब कि सतगुरु से जुदाई हुई, तो बग़ैर उलटे पलटे अंतर में कैसे दर्शन मिले, ज़रूर इसमें थोड़ी देर लगेगी और कोई दिन मेहनत और रगड़ सच्ची करनी पड़ेगी, पर इस काम में यह आलस करता है और टूट कर[1] मेहनत नहीं करता है। जो कोई दिन सब्र और धीरज करके प्रीति सहित इस काम में लगा रहे, तो ज़रूर दर्शन का रस अंतर में मिले। असली दर्शन तो बहुत दूर है, पर चरन सब जगह मौजूद हैं। चरनों के रस का सहारा बड़ा भारी है। जो ज़रा भी रस मिले, तो वह भी दर्शन से कुछ कम नहीं है और जहाँ चरन हैं, वहाँ दर्शन भी मौज से मौजूद हैं।

५४—ज़ाहिर है कि कितनी मेहनत और तकलीफ़ और देरी से दुनियाँ की विद्या और सामान हासिल होते हैं और दुनिया की कोई कोई चाहें तकलीफ़ से किसी क़दर पूरी होती हैं। ऐसे ही परमार्थ में भी प्रतीति और धीरज के साथ दया का भरोसा करके चलना चाहिये और निश्चय धरना चाहिये कि ज़रूर मेहर आवेगी और रस देवेगी।

१—ज़ोर के साथ।

५५–बाहर के आसरे का बहुत ख़्याल न रखना चाहिये, केवल इतना ही बहुत है कि स्वरूप की याद और उसकी लीला का ख़्याल आता रहे। और चरनों में प्रार्थना करके उस स्वरूप को, जिस क़दर हो सके, अंतर में प्रगट करे, क्योंकि जो सतगुरु का स्वरूप देहवाला पास नहीं है, तो असली चेतन रूप, जो घट में मौजूद है, वह तो निकट है। जब यह निश्चय है कि सतगुरु राधास्वामी दयाल हर एक के संग अंतर में मौजूद हैं, तो फिर मेहनत करना ज़रूर चाहिये, इस आशा पर कि उनका स्वरूप एक दिन घट में प्रगट होगा। और चरन रस और शब्द रस तो थोड़े ही दिनों में मिलना शुरू हो जावेगा।

५६–सब तरह के बचन हुज़ूरी पोथी में मौजूद हैं, केवल अंतर में धीरज और निश्चय के संग कोई दिन मेहनत करना चाहिये। पहले थोड़े दिन तक तो तार लगा कर सुमिरन, ध्यान और भजन करो और देखो कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल कुछ न कुछ मेहर से सहायता करते हैं कि नहीं। दो चार महीने कुछ बहुत नहीं हैं, बल्कि बहुत जल्दी है। जिसको सच्ची चाह है वह तो मगन होकर अंतर में ज़ोर लगाना शुरू करेगा। फिर नहीं मालूम उसपर कितनी जल्दी दया हो जावे, यानी जिस क़दर मन और सुरत सफ़ाई से चलेंगे उतना ही जल्दी रस मिलेगा, यानी जितनी बासना और तरंगें संसारी कम होंगी उतनी ही परमार्थ की चाह ज़बर होगी और उतना ही अंतर में सफ़ाई और आसानी से लगेगा और उसी मुआफ़िक़ जल्दी आनंद और रस मिलेगा। मियाद छः महीने की जो लिखी गई है वह अंदाज़न् लिखी गई है, पर सतगुरु राधास्वामी दयाल अपनी मौज और मेहर से चाहे कई महीने में और चाहे कोई दिन में, जैसा जिसका अधिकार होवे उसके मुआफ़िक़, उसको आनंद और रस अपने चरन कँवल का बख़्शेंगे। और चरन कँवल कहने में तीनों रस यानी स्वरूप और नाम और शब्द के शामिल हैं।

५७–बाज़े जीव मेहनत तो करना नहीं चाहते और न अपने मन और इन्द्रियों को फ़िज़ूल भोगों की तरफ़ से हटाते हैं और न

अपना चालचलन दुरुस्त करते हैं और न फ़िज़ूल चाहें दूर करते हैं, सिर्फ़ मेहर और दया माँगते हैं। सो यह माँगना तो बुरा नहीं है, पर इस क़दर ख़्याल करना चाहिये कि जब तक यह जीव थोड़ी बहुत कोशिश वास्ते अपनी अंतर की सफ़ाई के, यानी कम करने भोगों की चाह के और ख़राब न खोने अपने वक़्त के, सचाई से न करेगा, तब तक मेहर का प्राप्त होना मुश्किल है।

५८—बहुत घबराहट बाहर की मुनासिब नहीं है, इसमें अंतर का जोश कम होता है। घबराहट को भी, जब उठे और जिस क़दर बन सके, अंतर में फेरो। अगर रोना आवे तो अंतर में ऊपर की तरफ़ मन को खैंचो और रोओ और ऐसी हालत में जो बाहर की तरफ़ भी आँसू निकलें, तो कुछ हर्ज नहीं है, क्योंकि जब वह धारा ज़बर है तो किसी क़दर बाहर भी फैल जावे तो उसमें ज़्यादा हर्ज नहीं होगा। फिर हर हाल में, यानी वक़्त बिरह और बेकली और घबराहट और तड़प और दर्द के अपनी सुरत और मन और दृष्टि और ख़्याल को ऊपर की तरफ़ अंतर में चरनों में खैंच कर लगाना शुरू करो और इसी तरह चन्द रोज़ करके देखो कि हुज़ूर राधास्वामी कैसी दया फ़रमाते हैं। इसके हासिल करने के वास्ते ज़रा मेहनत और धीरज थोड़े दिन का चाहिये, फिर जल्दी फल उसका प्रगट होगा।

५९—अभी जीव इस लायक़ नहीं हैं कि उसकी सुरत और मन चढ़ाये जावें, क्योंकि सफ़ाई अंतर की अच्छी तरह नहीं हुई है। जो ज़रा भी अंतर में गहरा आनंद और रस मिल जावे, तो फिर या तो चारपाई छोड़ने का इरादा न होगा या और तरह की तरंगे जीवों के उपकार के निमित्त उठावेंगे और कहेंगे कि अपने गुरू का नाम प्रगट करना चाहिये और फ़लाने को चिताना और फ़लाने को खैंचना चाहिये। और हाल यह है कि अभी मन में मान और आदर की चाह भरी हुई है। यह सब बातें जो मन बनाता है, सबमें यह अपना मान और आदर चाहता है। और जो इसको इन कामों का मौक़ा मिल जावे, तो अचरज नहीं है कि चौरासी में जाने का काम करे, यानी स्त्री और

धन और आदर और मान के समुद्र में बह जावे और ग़ोते खावे और औरों को भी ले डूबे और जो कोई हित करके समझावे या कुछ कहे, तो उसको बैरी देखे और यह कहे कि इसको मेरी ईर्षा है, इस सबब से यह मेरी बुराई दिखलाता है। और यह ख़बर नहीं कि उपकार के काम किस निमित्त कर रहा हैं, सिर्फ़ मान भोग और इन्द्री भोग और आदर भोग के लिये, न कि सतगुरु की निर्मल सेवा के लिये। क्योंकि जो ऐसा हाल होता तो मन पर सवार होता, कभी किसी के कहने का बुरा न मानता और सबसे हित और प्यार करता और मान बड़ाई और स्तुति से अपना बचाव करता और अपने तईं पुजवाने से राज़ी न होता और दासता का अंग न छोड़ता। पर क्या करे, ज़रा सा रस आया था सो ले उड़ा और जो सम्हल कर न चला, तो आगे की तरक़्क़ी का रास्ता बंद होने का डर है।

६०—इस वास्ते विचारना चाहिये कि पहले सब तरह से अपने मन की सफ़ाई करना ज़रूर है, ताकि कोई बासना संसारी या परमार्थी बाहर के कामों की इस मन में बाक़ी न रहे। और परीक्षा करके अपनी जाँच करना चाहिये कि धन और माया के पदार्थ और स्त्री और इन्द्री भोग और मान बड़ाई और स्तुति और आदर हमको बेहोश और ग़ाफ़िल कर देते हैं या नहीं। जो मन ज़रा भी इन पदार्थों की तरफ़ झुके और उनकी प्राप्ति में मगन होवे और उन पदार्थवालों का संग करने को तैयार होवे, तो जानो कि अभी घट में चोर बैठा है। इस वास्ते अभी सफ़ाई करे जाओ और मन से लड़े जाओ। जल्दी मत करो। सतगुरु राधास्वामी दयाल का सहारा लेकर अंतर में कोशिश जारी रक्खो और अपनी अपनी हालत को आप परखते चलो, दूसरे की बात को ज़रा मत मानो। स्तुति करने वालों को अपने हाल की तो ख़बर ही नहीं है, फिर दूसरे की महिमा क्या जानेंगे। यह हाल सतगुरु जानें या वह जिसको वे अपनी दया से जतावें, और नहीं तो यह मन बावलों[1] और अन्धों के मुआफ़िक अन्धाधुंध चलता है और बोलता है और अपने को

१—पागलों।

आप ही बड़ा मानता है और मूर्खों की स्तुति पर गुमान करके ख़ुश होता है और इस तरह अपना रास्ता आप बंद कर लेता है। जो सतगुरु दयाल सिर पर हैं, तो वे इसको जब तब टक्कर और चक्कर देकर होशियार करते रहेंगे और मेहर से बचाते रहेंगे और नहीं तो कुछ ठिकाना नहीं है। इस वास्ते जल्दी मत करो और घबराओ मत और अपने मन की दशा परखते हुए चलो। जो मन की दशा परखते हुये चलोगे, तो जल्दी की घबराहट आप जाती रहेगी और जैसे जैसे उसकी सफ़ाई और दुरुस्ती देखते जाओगे, उसी क़दर हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया की प्रतीति आती जावेगी और वह दिन दिन बढ़ती जावेगी और इसी तरह सब काम दुरुस्त हो जावेगा।

६१—बाहर के सहारे की प्रीति और प्रतीति तो ज़रूर चाहिये पर सतगुरू के स्वरूप और शब्द और दया को अंतर में भी प्रगट करना चाहिये और अंतर ही में उसको ढूँढ़ना और खोजना और अंतर ही में उससे मिलने की गहरी चाह रखना चाहिये। तब मन आहिस्ता आहिस्ता अपनी आदत को छोड़ कर अंतर में थोड़ा बहुत जतन करेगा और उसका फल भी हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया और मेहर से उसको मिलता जावेगा। कोई दिन मेहनत और तकलीफ़ होगी, फिर हमेशा को आराम हो जावेगा। इस वास्ते इस तकलीफ़ को बरदाश्त करने का इरादा करना चाहिये और हुज़ूर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया का भरोसा दृढ़ रखना चाहिये।

६२—सब कारज हुज़ूर राधास्वामी दयाल आप कर रहे हैं और सबका काम आप पूरा करेंगे, कोई अपने मन में निरास न होवे। जैसा तैसा जो कोई उनका है, यानी जिस क़दर जिसने उनके चरनों की सरन ली है, उनको सबका ख़्याल है और सबका काम, थोड़ा या बहुत जैसा होता है, आप बनाते जाते हैं और एक दिन सबको ज़रूर अपने चरनों में पहुँचावेंगे और वहाँ ही रक्खेंगे। पर उनका सच्चा दास हो जाना चाहिये और जिस क़दर हो सके, उनके चरनों में उनकी दया का बल लेकर दीनता के साथ गहरी प्रीति करना चाहिये और किसी संसारी बल

का भरोसा नहीं रखना चाहिये। ऐसी सच्ची प्रीति और दीनता का नाम सरन है, यानी मन को अपने अंतर में सबसे हटा कर एक हुज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों का बल और भरोसा रक्खे और बाहर के सहारों का भी थोड़ा बहुत ख़्याल मुआफ़िक़ दस्तूर[1] दुनिया के रक्खे और बाहर से उनका निरादर न करे।

६३–बिरह और बेकली रास्ता खोलने वाली और साफ़ करने वाली है। जिन जिन को राधास्वामी दयाल ने ऐसी हालत दी है या आगे देवें, वह अपने बड़े भाग समझें कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी ख़ास बख़्शिश देने के लिये उनकी गढ़त कर रहे हैं और ख़ास बख़्शिश हुज़ूर राधास्वामी दयाल की यही है कि चरनों में गहरा प्रेम और आनंद आवे। यह बड़ी भारी दौलत है, जिसको यह मिली या मिलेगी, वही निश्चिंत हो जावेगा। और यह प्रेम ऐसा होना चाहिये कि जब चाहे चरनों में चित्त जोड़ कर थोड़ा बहुत रस हासिल कर सके और शांति को प्राप्त होवे। इस वास्ते इस बेकली और घबराहट को बुरा जानना नहीं चाहिये और अपने भाग को और सतगुरु की दया को परखना और उनका गुन गाना चाहिये।

६४–और जिस किसी को यह बात हासिल नहीं है यानी बिरह और बेकली नहीं है, उसको चाहिये कि इसके लिये प्रार्थना करे। इससे सफ़ाई मन की जल्द होगी और जो थोड़ी प्रीति हुज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों में हासिल है वह निर्मल और पक्की और सच्ची अंतर में हो जावेगी। बारम्बार यह समझना चाहिये कि बिरह और बेकली भारी दात है, इसके बिना सारे जगत के परमार्थी मारे मारे और ख़ाली फिरते हैं। जो बिरह और बेकली पैदा होवे तो उसका शुक्र करना चाहिये और दिन दिन चरनों में प्रेम बढ़ाना चाहिये। और इस बेकली के साथ दया लगी हुई है, क्योंकि इसका और उसका संग है और फिर ज़रूर प्रेम की बख़्शिश होती जावेगी।

१—रिवाज।

६५–मन का हाल बड़ा ज़बर है। सतगुरु की दया का भरोसा चाहिये, वे सब तरह कारज बनावेंगे और जीव को सच्चा परमार्थी कर देंगे। और किसी जतन से काल और कर्म को जीतना किसी का काम नहीं है। यह तो केवल संत ससगुरु से डरते हैं और सतगुरु ही उन पर सवार हैं और बाक़ी सब लोग उनके ग़ुलाम हैं। इस वास्ते सतगुरु की दया से बेड़ा पार होना सब तरह मुमकिन और आसान है और वे ही सच्ची प्रीति और प्रतीति बख़्शेंगे और अपनी कृपा से मंज़िल पर पहुँचावेंगे, पर सेवक को चाहिये कि सतगुरु के बचनों को चित्त से सुने और समझे और जहाँ तक हो सके उनके अनुसार कार्रवाई करे।

६६–हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया कुल जीवों पर निहायत गहरी और अपार है, पर जो कोई देखे और परखे उसको मालूम हो सकती है या जिसको वे आप अपनी दया से दिखावें और परख देवें वह देख सकता है। हुज़ूर राधास्वामी दयाल की गति अगम और अपार है। जीव की समझ और बुद्धि जो साथ काम और क्रोध और संसारी अंगों के लिपटी हुई है, क्या ताक़त रखती है कि कुछ भी परख सके? कभी कभी जो ऐसी मौज और दया हो जाती है और कुछ कुछ और किसी किसी बात की ख़बर पड़ जाती है, सो इसकी भी सम्हाल, जैसी कि चाहिये, नहीं हो सकती। हुज़ूर राधास्वामी दयाल आप ही, जैसा मुनासिब है, जीवों का निर्वाह करते हैं।

६७–ज़रा विचार करने से मालूम होगा कि मन में अभी अंधाधुंध कीचड़ काम और क्रोध और लोभ और मान और बड़ाई की भरी हुई है। यह जीव अभी इस लायक़ नहीं है कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया लेवे, पर वे अपनी कृपा से बेड़ा पार लगावेंगे। जो सच कहा जावे, तो इसका नाम समझ बूझ नहीं कह सकते हैं कि जानना और फिर भूल में पड़ना। यह ऐसा है कि अँधेरे में कुछ चमक आई और कुछ देखा गया और फिर जब अँधेरा हो गया, अंधों की तरह उन्हीं झगड़ों में भूल गया। यही मन का हाल है, चाहे कोई प्रतीति करे या नहीं। और जब तक यह हालत मन की है और संसारी चाहें

उसके अंतर में बस रही हैं और उनकी आशा अंतर में धरी है, तो यह निर्मल परमार्थी अंग नहीं हो सकता है। यह तो संसारी अंग है और इसी सबब से दया में भी देर है।

६८—हर एक को मुनासिब है कि अपने हाल की नित्य परख करता जावे, क्योंकि जीव ऐसी हालत और जगह में पड़ा है कि जहाँ कीचड़ की दलदल है और उसमें किसी क़दर फँसा रहता है। हुज़ूर राधास्वामी दयाल ही अपनी दया से बचावेंगे, और किसी तरह गुज़ारा नज़र नहीं आता है। और ऐसा ही हाल मन का भजन और सतसंग के वक्त समझ लो। पर उसमें दर्जे हैं। किसी को वक्त सतसंग के भी तवज्जह और सफ़ाई हासिल नहीं होती, तो भजन के वक्त बिलकुल सफ़ाई होनी बहुत मुश्किल है। पर जिन पर दया है उनको दिन दिन सफ़ाई और तवज्जह अंतरी हासिल होती जावेगी।

६९—और मालूम होवे कि भजन और सतसंग और ध्यान में इस मन को अभी ऐसा रस नहीं आता है जैसा कि इन्द्रियों के भोगों में। इसी सबब से परमार्थ में कच्चा और ढीला रहता है और संसार में सच्चा और पक्का, पर आहिस्ता आहिस्ता जिस जिस पर कि मेहर है उनको सतगुरु दयाल राधास्वामी आप सम्हालेंगे और जब तब अपने दर्शन और ज़रा ज़रा क़ुदरत दिखलाते हुए और संसार और भोगों से डराते हुए इस जाल से निकाल लेवेंगे, क्योंकि जब कभी कुछ अंतर में ज़रा सा प्रकाश हो जाता है तो कई दिन को उसका ख़्याल और उसके सबब से संसार का डर रहता है और जहाँ कुछ दिन गुज़रे और ग़फ़लत आई तब फिर भूल जाता है। पर हुज़ूर राधास्वामी दयाल हैं, वे थोड़े दिन ऐसी भूल की बरदाश्त करके फिर ज़रा सा इशारा अपनी दया का कर देते हैं। तब फिर होश आ जाता है और अपने किये पर शरमाता है और पछताता है और इरादा करता है कि अब न भूलूँगा, पर फिर भूल पैदा हो जाती है। सबब इसका यह है कि यह अभी भूल और ग़फ़लत के स्थान पर बैठा है और आहिस्ता आहिस्ता वहाँ से हटाया जाता है। इसी तरह कुछ दिनों में जब किसी

क़दर उस ग़फ़लत के स्थान से दूरी हो जायगी, तब भूल भी कम होती जायगी और जो रस कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल उसको कभी कभी अपनी दया से दिखावेंगे, उसकी याद ज़्यादा रहती जावेगी। फिर भूल जो आवेगी भी, तो बहुत कम ठहरेगी और होशियारी बढ़ती जावेगी। होशियारी से मतलब यह है कि सतगुरु की याद या उनकी क़ुदरत और दया की याद और ख़ौफ़ ग़फ़लत का रहा आवे। सो यह होशियारी हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया से पैदा होती जावेगी और आगे को बढ़ती जावेगी। इसमें जल्दी नहीं करना चाहिये। जो जल्दी यह बात ज़ाहिर होगी, तो फिर जो जो काम अब लिये जाते हैं उनमें फ़र्क़ पड़ेगा। कुछ दिन सब्र करना मुनासिब है। हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से सब तरह जल्दी आप कर रहे हैं और जब हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया को अच्छी तरह परखोगे, तो यह भी हाल कि क्यों इस क़दर देर होती है खुल जावेगा और उसकी मसलहत सब मालूम हो जावेगी।

७०—हुज़ूर राधास्वामी बड़े दयाल हैं और बड़े कारज-कर्त्ता[1] कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता है। ऐसी दया कभी किसी ने नहीं करी, क्योंकि बाहर से संसारी कामों में बरताव कराना और अंतर में परमार्थी काम बनवाते जाना, यह ताक़त सिर्फ़ पूरन दयाल और सर्व समर्थ पुरुष की है। बल्कि सोते वक़्त भी ख़ास दयापात्रों[2] पर ख़ास मेहर सुरत और मन की चढ़ाई की करते हैं।

७१—हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया यह चाहती है कि सबको पार लगावे। जो कोई चाह नहीं करते, उनको जीते जी चाहे कुछ न मालूम पड़े, पर दुरुस्ती उनकी भी जारी है ताकि अन्त समय पर आसानी से काल और माया के जाल से निकाल लिये जावें, क्योंकि हुज़ूर राधास्वामी दयाल को सब जीवों की, जो उनके चरनों में आये हैं, लाज है, चाहे वे अपना फ़िक्र करें या न करें। हुज़ूर राधास्वामी दयाल

१—कारज करने वाले यानी काम बनाने वाले। २—जिन पर दया है।

हर एक की, जैसी जैसी मुनासिब और ज़रूरी है, सफ़ाई अंतर की आप ही करते हैं।

७२—और जिनके हृदय में दर्शन की अभिलाषा तेज़ है उन पर विशेष दया होती जाती है, यानी उनको आहिस्ता आहिस्ता अपनी लीला और दर्शन दिखाते जाते हैं। और उनके सुरत और मन की सफ़ाई करके ऊपर को खेंचते और चढ़ाते जाते हैं, ताकि वे जीते जी कुछ तमाशा और सैर अंतर की करें और अपना उद्धार आप अपनी आँख से देख लें। ऐसे लोगों को अलबत्ता प्रीति और प्रतीति चरनों में ज़्यादा से ज़्यादा होगी और दूसरों को मामूली तरह पर। पर प्रीति और प्रतीति सबकी हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर से बढ़ाते जाते हैं और अन्त समय से पहले उनकी थोड़ी बहुत दुरुस्ती कर लेंगे।

७३—जो बचन ऊपर लिखे गए हैं वह सब सही और दुरुस्त हैं, पर जिस किसी की सुरत और मन जिस क़दर ऊँचे चढ़ते जावेंगे उसी क़दर कैफ़ियत उसको नज़र आती जावेगी और इन बचनों की सचौटी और ज़रूरत की भी उसको ख़बर पड़ती जावेगी और हुज़ूर राधास्वामी दयाल की बानी की भी क़दर मालूम होती जावेगी कि कैसी ऊँची और गहरी है कि आज तक किसी संत ने ऐसी बानी नहीं कही। पर यह हाल बग़ैर गहरे अंतरमुख हुए मालूम नहीं पड़ सकता है और इसी सबब से हुज़ूरी बानी में मन कम लगता है, क्योंकि उसका रस बड़ा गहरा है। जब सुरत और मन को थोड़ा अंतर में धसा कर और बाहर से ख़ूब समेट कर बानी को सुने, तब पूरा पूरा रस उस बानी का आवे। सो यह हालत कभी कभी हो जाती है। जो किसी को हमेशा प्राप्त होवे, तो उसके बड़े भाग जानने चाहिये, क्योंकि फिर उसके मन और सुरत भी गहरे अंतरमुखी हो जावेंगे और दुनियाँ की तरफ़ तवज्जह कम होती जावेगी।

७४—जो हुज़ूर राधास्वामी दयाल कभी कभी अपनी दया से रस देते हैं इसका शुकराना अदा नहीं हो सकता है और इसी तरह गहरी

प्रीति और प्रतीति आहिस्ता आहिस्ता होती जावेगी और मन और सुरत भी अंतर में धसते जावेंगे। यह काम जल्दी का नहीं है। आहिस्ता आहिस्ता में बड़ा फ़ायदा है और बड़ी मसलहत है और बड़ा रस है, जल्दी में बेहोशी और ग़फ़लत दूसरी तरह की पैदा हो जाती है। फिर जब कि सतगुरु और उनकी मेहर और लीला की ख़बर न पड़ी, तो क्या फ़ायदा हुआ? इसलिये ज़्यादा घबराहट नहीं चाहिये। हर दम हुज़ूर राधास्वामी को पिता दयाल और रक्षक समझो और जो वे अपनी मेहर से करावें, वह करे जाओ और भरोसा दृढ़ उनकी दया का रक्खो। वे एक दिन सब काम पूरा करेंगे और किसी तरह किसी को, जो उनके चरनों में आया है, ख़ाली नहीं रक्खेंगे।

७५—सच्चे प्रेमी से जो कुछ हो रहा है और जो कुछ वह कर रहा है, सब मौज से है। इसमें मसलहत[1] है। जो उसका थोड़ा दुनिया के काम में मन न लगे, तो निहायत तकलीफ़ होगी। हुज़ूर राधास्वामी दयाल जब चाहेंगे जब एक छिन में उसको न्यारा कर लेंगे। सच्चे प्रेमी का कुछ हर्ज नहीं है, उसको एक बचन में चेत[2] हो सकता है और एक बचन में वह खिंच सकता है और जोकि अभी परमार्थ की गहरी हालत देने में देर है, इस सबब से उसको थोड़ा काम संसार और परमार्थ का दे रक्खा है। नहीं तो उसका शौक़ बहुत तेज़ है, जो उधर तवज्जह करे तो बहुत जल्दी मचावे और ज़्यादा घबराहट दिलावे और ऐसी हालत घबराहट और तकलीफ़ की उसको देने की मौज नहीं है। वह सब तरह साफ़ और तैयार है, वक़्त पर सब दुरुस्ती फ़ौरन् हो हो जावेगी। उसकी बाहरी हालत पर नज़र न करना चाहिये, अंतरी प्रीति और प्रतीति की हालत देखना चाहिये। सो उसमें कोई कसर नहीं होगी, एक छिन में सब बखेड़ों को पटक देवेगा और जब तक कि ऐसा वक़्त आवे इस दुनिया के काम में भी उसके हाथ से किसी क़दर जीवों का परमार्थी उपकार बनेगा। यह प्रतीति करना चाहिये कि जो ख़ास हुज़ूर राधास्वामी दयाल की सेवा में हैं, उनका किसी तरह हर्ज

१—विशेष मौज। २—होश।

नहीं होगा, चाहे वे कहीं और किसी काम में लगें रहें, किसी तरह का बिगाड़ न होगा। दया की मौज उनके अंग संग है और उनकी गढ़त सब तरह सतगुरु दयाल आप कर रहे हैं और जिनके हृदय में तलब[1] और तड़प सच्ची वास्ते दर्शनों के है, वही ख़ासों में हैं। उनकी रक्षा और ख़बरगीरी हुज़ूर राधास्वामी दयाल आप कर रहे हैं और सब तरह उनका काम आप पूरा करेंगे।

७६—हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया बहुत है और सब की गढ़त जारी है। और जो ख़्याल दिल में पैदा होते हैं, उनकी निस्बत साफ़ साफ़ यह नहीं कहा जा सकता है कि सब मौज से ही पैदा होते हैं, बाज़े मौज से हैं और बाज़े मन की तरंग में भी दाख़िल हो सकते हैं। और इसका निर्णय हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया से, चाहे ख़्याल उठने के वक्त और चाहे थोड़े दिनों के पीछे, मालूम हो सकता है। और यह भी दुरुस्त है कि सब बातों में मौज के जताने की मसलहत नहीं है, बाज़े में मौज मालूम पड़ती है और बाज़े में मन को शक रहता है और बाज़े काम बग़ैर सोचने और ख़्याल करने के हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मौज और दया से दुरुस्त कर देते हैं या करा लेते हैं। हुज़ूर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया अपार है। चरनों में ज़रा भरोसा रख कर लगे रहो और सैर देखते जाओ कि कैसे कैसे जीव का बेड़ा पार करते हैं। अनंत लीला और अनंत मौज और अपार क़ुदरत हुज़ूर राधास्वामी दयाल की है।

७७—जिस किसी साधू की दूसरे साधू के साथ या सतसंगी की दूसरे सतसंगी के साथ हद से ज़्यादा प्रीति हो जावे कि जिससे राधास्वामी के चरनों की प्रीति में ख़लल पड़े, तो उसको समझा कर कम कराना चाहिये। पर जल्दी न करना चाहिये और न ज़्यादा दबाव डालना चाहिये, क्योंकि जब तक थोड़े दिन तकलीफ़ की बरदाश्त न करी जायगी, तब तक वह प्रीति कम न होगी। साधारण प्रीति

१—ख़्वाहिश।

आपस में साधू और सतसंगियों के रहना मुनासिब है और ज़्यादती में तकलीफ़ और नुक़सान होता है।

७८–ज़्यादा ज़ोर हुज़ूर राधास्वामी दयाल के स्वरूप के ध्यान और अंतरी सुमिरन नाम पर देना चाहिये। और जिस किसी की प्रीति किसी के साथ मामूली से ज़्यादा है, तो वह अंतर में सतगुरु के स्वरूप के प्रगट करने में क्यों नहीं ज़ोर देता है? बाहर की पकड़ दूसरे आदमी में इस क़दर क्यों मज़बूत करता है जिसमें तकलीफ़ होवे? और जब सतगुरु आप मौजूद हैं, वह भी यह बात नहीं पसंद करते कि किसी जीव की ज़्यादा पकड़ उनके बाहर के स्वरूप में होवे। पहले चरनों में लगाने के वास्ते यह तजवीज़ की जाती है कि बाहर का प्रेम और शौक़ बरदाश्त जाता है और जब किसी क़दर लग गया, तब अंतर में भी धसाने की मौज है। चाहे कोई नया जीव भी है, पर वह भी जिस क़दर जल्दी अंतर में धसने का इरादा करे, उसी क़दर जल्दी फ़ायदा होगा और अख़ीर को काम अंतर के स्वरूप से सबको पड़ेगा। इस सबब से चाहिये कि सतगुरु के बाहर के स्वरूप को अंतर में प्रगट करो। सो आहिस्ता आहिस्ता होगा, जल्दी नहीं। और बाहर के स्वरूप में इस वास्ते पहले प्रीति ज़्यादा लगाई जाती है कि उस प्रीति के आसरे संसारी स्वरूपों और पदार्थों से थोड़ा बहुत हट कर सतगुरु के स्वरूप को अंतर में प्रगट करके, और जो अंतर में जल्दी प्रगट न होवे, तो उसका स्थान स्थान पर ख़्याल और अनुमान करके, उसमें ऐसा लगे कि उसके सहारे से अंतर में दर्जे बदर्जे चढ़ता जावे। तब एक रोज़ असली पद को पावेगा। मतलब यह कि सतगुरु राधास्वामी दयाल ही के स्वरूप को अंतर में प्रगट करके उसमें प्रीति लगानी चाहिये। चढ़ने में सतगुरु का स्वरूप मदद देगा, और किसी के स्वरूप को अंतर में प्रगट करके उसमें प्रीति लगाने से चढ़ने में मदद नहीं मिलेगी। अंतर के मुक़ामी स्वरूप के ध्यान करने से किसी क़दर सहारा मिलेगा, पर जैसी तरक्क़ी और चढ़ाई सतगुरू या साधगुरू के स्वरूप के ध्यान से सहज में हो सकती है, वैसी तरक्क़ी दूसरे किसी के स्वरूप के ध्यान से नहीं हो सकती है।

पर शर्त यह है कि जिस स्वरूप का यह ध्यान करे, उसमें थोड़ा बहुत प्रेम होना चाहिये, नहीं तो ध्यान दुरुस्ती से नहीं बनेगा। यह हाल सतसंग और अभ्यास के करने से मालूम हो सकता है, पर यह बात उसी को मालूम पड़ेगी जो सच्चा प्रेमी है और आप साध बनना चाहता है।

७९—मन एक अंडे के मिसाल है, एक सिरा उसका ऊँचे की तरफ़ और एक सिरा नीचे की तरफ़ है। एक धार ऊपर के लोक में से आकर उसमें समाती है और नीचे की तरफ़ से धारें निकल कर पिंड में फैलती हैं। और जब से जीव पिंड में आया है, तब से धारा का ऊपर से आना और पिंड में फैलना शुरू हुआ है। जो जीव कि जल्दी वास्ते उद्धार के करते हैं, सो हो सकता है, क्योंकि सतगुरु समर्थ हैं, वह अपनी मौज से कर सकते हैं। पर जोकि उस धारा को पिंड में उतरते कितने ही वर्ष का अरसा हो गया है और सतगुरू और सतसंग मिला नहीं, तो कैसे यकायक ऊपर को उलटे और जब तक ऊपर को उलट कर कुछ भी कैफ़ियत और मज़ा उस सिंध का, जहाँ से वह धारा आई है, नहीं देखे, तब तक उद्धार के होने का पूरा निश्चय नहीं हो सकता है। सो यह बात जब तक अपने वक़्त के सतगुरु नहीं मिलेंगे और उनके सतसंग में यह जीव दीन होकर नहीं जावेगा और उनके हुक्म के मुआफ़िक़ अमल नहीं करेगा, हासिल नहीं होगी और तब तक उलटना उस धारा का, जोकि बहुत दिनों से उतरती आई है, नहीं हो सकता है। अब बिचारो कि वक़्त के सतगुरु की किस क़दर ज़रूरत है। पिछलों की बानी से गवाही मिल सकती है, पर जुगत उलटने धार की वक़्त के ही सतगुरु से मिलेगी, क्योंकि ग्रंथों में यह जुगत साफ़ साफ़ नहीं लिखी है।

८०—जीव भी पिंड में बैठा है और इसका मालिक भी पिंड में मौजूद है। कहीं बाहर इसको तलाश करने की ज़रूरत नहीं है। क्योंकि इस जीव को इस संसार में आए बहुत अरसा गुज़र गया है और माया

के पदार्थों में लिपट कर अपने मालिक से ग़ाफ़िल हो गया है, अब जो इसको सतगुरु का संग मिले और उनके बचन चित्त देकर सुने और तवज्जह के साथ समझे और जो जुगत वह बतावें उसका अभ्यास करे, तो एक दिन मालिक का दर्शन इस पिंड में मिल सकता है।

८१—अपने आप में जो स्वरूप सतगुरु का है, उससे सबको काम पड़ेगा, पर जैसे बने और जिस क़दर हो सके अंतर में थोड़ा बहुत रस लेने की आदत मन को डालना चाहिये। जिस वक्त यह जीव सतगुरु के सन्मुख होता है, उसके मन की वृत्ति और सुरत सिमट कर एक हो जाती है और इसी सबब से उसको अंतर में रस मिलता है और आनंद भी आता है। इसी वजह से सतगुरु से अलग होना नहीं चाहता है, क्योंकि उनके आगे उसका यह काम आसानी से बनता है और अकेले में थोड़ी दिक्कत पड़ती है, पर जैसे हो सके वैसे अकेले में भी अपने मन और सुरत को समेटना चाहिये। जब किसी स्थान पर आँखों से ऊपर वह सिमट जावें और ठहर जावें, तो थोड़ा बहुत अंतर में रस ज़रूर मिलेगा। पर समेटने में ज़रा दिक्कत और तकलीफ़ होती है और सतगुरु के आसरे आसानी से सिमट जाते हैं, क्योंकि उनमें भाव और प्रीति है और उनके दर्शन के असर से जल्द सिमटाव होता है।

८२—इस जीव की हुज़ूर राधास्वामी दयाल आप खबर रखते हैं और अपनी दया से सुरत को चढ़ाते जाते हैं। और मन, माया भी रास्ते में अटकाव करते जाते हैं। सो वह अटक हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी मेहर और दया का बल देकर तुड़वाते जाते हैं। इसी के हाथ से सब काम कराते हैं, पर असल में कर्त्ता आप हैं।

८३—जो जुगत कि इस जीव के वास्ते प्राप्त करने प्रीति अंतर के सतगुरु ने बताई है वह बहुत भारी है। एक ही रोज़ में या थोड़े ही दिन में हालत नहीं बदल सकती, पर यह जुगत ऐसी है कि जो थोड़ी बहुत जिस क़दर बने हर रोज़ करे जावे, तो कुछ दिनों में हालत बदलनी शुरू होगी। यह काम एक या दो दिन का नहीं है। सतगुरु अपनी

मेहर से आहिस्ता आहिस्ता काम बनावेंगे, घबराहट और जल्दी हद से ज़्यादा नहीं चाहिये। जो प्रीति बाहर में एक मन है तो वह अंतर में एक छटाँक की बराबर होती है, स्थूल का खेल और है और सूक्ष्म का और। जीवों को अंतर में सहारा देने के वास्ते यह जुगत बताई गई है। इस जुगत को करते करते थोड़े दिनों में हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया का सहारा अंतर में मिलने लगेगा। इस वास्ते घबराना नहीं चाहिये और भरोसा उनकी मेहर का मज़बूत रखना चाहिये।

८४–सब जीव अभी मन के घाट पर बरत रहे हैं, लेकिन जिनकी वह अंश हैं वह कुल मालिक हैं और जो जो उनके चरनों का भरोसा और प्रीति और याद कर रहे हैं, उनकी ख़बरगीरी सब तरह से वे आप कर रहे हैं। और वैसे तो वह सब के हाल को देखते हैं, पर जो अक्सर उनको प्रीति सहित याद करते हैं और निपट उनकी दया के आसरे हैं, वे आप अपनी दया से उनकी ख़बरगीरी करते हैं और उनको सम्हालते हैं। एक दिन ज़रूर मन के घाट से अलग करके अपने निज चरनों के घाट पर पहुँचावेंगे और जब तक ऐसा होवे, अक्सर अपनी दया और मेहर के अमृत यानी प्रेम की धारा से उनकी सुरत और मन को सींचते रहते हैं, नहीं तो यह नाज़ुक पौदे भक्ती के सूख जावें। इस वास्ते मत घबराओ और भरोसा हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया का दृढ़ रक्खो। वे आप सब काम करा रहे हैं और हर काम में आप मददगार हैं। जीव की क्या ताक़त है जो किसी तरह का सच्चा बरताव परमार्थ का कर सके, बिना उनकी मेहर और दया के। धन्य भाग उन लोगों के हैं कि जिनको इस देह में सतगुरु मिले और उनको उनके चरनों में निश्चय आ गया।

॥ कड़ी ॥

बड़े भाग जिन सतगुरु पाये। चौरासी से तुर्त हटाये॥
यह संसार अगिन भंडार। शीतल जल सतगुरु आधार॥

८५–हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दयालुता का क्या ज़िक्र किया जावे कि वे अपने आप मिले, यानी आप जीव को खींचकर अपने चरनों में लगाते हैं और जो जो काम परमार्थी और परमार्थी सेवा कि जिनके सुनने और ख़्याल करने से जीवों का दिल डरता है और काँपता है, अपनी दया से उनको आप सहज में कराते हैं। फिर क्या ख़ौफ़ और डर है? वे ही सब तरह सम्हाल करेंगे और कर रहे हैं। जब तक मिलौनी का खेल है, यानी परमार्थी और संसारी दोनों काम कर रहे हो, तब तक उनकी दया साफ़ और प्रगट कम नज़र आती है और जब मौज से मिलौनी का झगड़ा हटावेंगे, तब देखोगे कि किस क़दर दात प्रेम की फ़रमाते हैं। इस बात का सच्चे परमार्थी को अपने मन में निश्चय रखना चाहिए कि एक रोज़ ज़रूर ख़ास दया फ़रमावेंगे और इस बात का मन में भरोसा रख कर उनकी दया का शुकराना करते रहो और चरनों की याद में लगे रहो। यह हुज़ूर राधास्वामी दयाल का ख़ास हुक्म है।

॥ कड़ी ॥

धीरज धरो करो सतसंगत, मेहर दया से लेउँ सुधारा।
संशय छोड़ करो दृढ़ प्रीती, और परतीत सम्हारा।
तुम्हरी चिन्ता मैं मन धारी, तुम अचिन्त रह धरो पियारा।
यह करनी मैं आप कराऊँ, और पहुँचाऊँ धुर दरबारा।
वह तो रूप दिखाकर छोडूँ, तुम जल्दी क्यों करो पुकारा।

॥ कड़ी ॥

॥ कौन करे आरत सतगुरु की ॥

ब्रह्मादिक सब तरस रहे हैं, मिली नहीं यह पदवी।
बड़े भाग जानो अब उनके, जिनको सरन परापत गुरु की।
गुरु समान समरथ नहिं कोई, जिन धुर घर की आन ख़बर दी।
मेरे भाग बड़े अब जागे, मिल सतगुरु सँग आरत करती।
भाव भक्ति क्या क्या दिखलाऊँ, मैं सतगुरु बिन और न रखती।

इससे ख़्याल करो कि सिर्फ़ हुज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीति और प्रतीति मज़बूत करनी चाहिए, फिर सब काम दुरुस्त हो जावेंगे। यह प्रीति और प्रतीति भी वह आप बख़्शते जाते हैं और एक रोज़ पूरी पूरी बख़्शेंगे।

८६–मन की हालत देखते और परखते चलने से अपनी नालायक़ी मालूम होती है और हुज़ूर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया पर नज़र करते चलने से उनकी अपार दयालुता का हाल मालूम होकर चरनों में दिन दिन प्रीति और प्रतीति बढ़ती है और सरन दृढ़ होती है।

८७–बाहर के कामों में इस मन को रस मिलता है और दिखावे का यह मन आशिक़ है। सो उन कामों में यह मन जल्दी लगता है और जो वे न मिलें तो रूठता है। और अंतर के कामों में इसका मरण होता है और इस पर तंगी अत्यंत पड़ती है। इस सबब से उन कामों को कम चाहता है और जब तक यह औरों के गुन औगुन उनके नुक़सान पहुँचाने की नज़र से या ख़ुशामद के तौर पर देखता है, तब तक इसकी बात का कुछ भरोसा नहीं है। अभी अपने हाल की ख़बर नहीं है और न इस तरफ़ की तवज्जह का होश है। ऐसे जीव से जो कोई उसके औगुन कहेगा, तो बेशक नाराज़ होगा। और जो अपने अंतर में अपने हाल को परखते चलते हैं, वह दूसरे का भी औगुन उसके नफ़े की नज़र से देखकर उसकी दुरुस्ती में मदद देंगे और अपने औगुनों की हर वक़्त निरख परख रक्खेंगे और शरमाते रहेंगे और प्रार्थना चरनों में करते रहेंगे। सो सब तरह का भरोसा रक्खो और अन्तर में धसने का इरादा मज़बूत करो। हुज़ूर राधास्वामी दयाल सब काम अपनी दया से आप पूरा करवा लेंगे।

८८–जो जुगत कि वास्ते निर्मल करने और चढ़ाने सुरत के बताई गई है, उसको नियम से प्रेम सहित करे जाओ। ऐसा नहीं हो सकता है कि थोड़े दिनों में उसका फल मालूम पड़े। कुछ दिन रगड़ करनी चाहिये। जो शौक़ तेज़ होगा तो रगड़ बन पड़ेगी। ऐसे भरोसे पर कि

एक रोज़ ज़रूर हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी कृपा से अंतर में रस देंगे, बराबर कोशिश करना चाहिए। और हठ करना किसी मामले में मुनासिब नहीं है। यह बड़ा ऐब है, इसको छोड़ना चाहिये। जब तक हठ तबीयत में है, तब तक वह जीव सतगुरु की पसंद के लायक़ नहीं हो सकता है। आगे जीवों को अख़्तियार है कि अपना नफ़ा और नुक़सान बिचार करके इस औगुन को चाहे कम करें या न करें, पर जब तक यह ऐब न छूटेगा, सतगुरु का संग अन्तर और बाहर दुरुस्ती से हो नहीं सकेगा।

८९—अन्तर में सच्चे होकर एक घंटा भी लगना मुश्किल है, गोया जान सी निकलती है। और बाहर चार पहर इसको लगाओ तो भी नहीं घबराता है, पर बिना थोड़ी बहुत लाग अन्तर में होने के काम दुरुस्त नहीं होगा। इसी सबब से सतगुरु सब जीवों को हमेशा पास नहीं रखते, क्योंकि जीव बाहरमुखी होना तो जल्द मंज़ूर करता है और अन्तर में लगना कम चाहता है। जब तक कि प्रीति और प्रतीति चरनों में किसी क़दर गहरी न होवे, तब तक संग नहीं रखते हैं और जब प्रीति और प्रतीति सच्ची और पक्की हो गई, तब चाहे संग रहे चाहे दूर, कुछ हरज न होगा। पर किसी किसी वक़्त फिर जुदा भी करते हैं, ताकि यह अन्तर का भी रस हासिल करता जावे। और जब जब मुनासिब समझते हैं, उसकी प्रीति तेज़ करने और बढ़ाने के लिये बीच बीच में दर्शन भी देते हैं, पर बराबर साथ रखना नहीं चाहते हैं जब तक कि इस की लाग किसी क़दर अन्तर में ठहर न जावे और मज़बूत न हो जावे। पर यह क़ायदा आम नहीं है। कभी किसी की प्रीति बाहर की मज़बूत करने के लिये और फिर अन्तर में अभ्यास कराने के लिये भी संग रखते हैं और जो कोई अन्तर और बाहर बराबर काम करता जावे, उसके अलग करने की ख़ास ज़रूरत नहीं होती।

९०—जुदाई की हालत में अन्तर में ज़ोर देना चाहिये और अन्तर में लगाने से प्रीति और प्रतीति सतगुरु की ज़्यादा होती है, क्योंकि

अन्तर में इसको सतगुरु की लीला मालूम होती है। यह बचन उनको प्यारा लगेगा जिनकी तबीयत में शौक़ अन्तर का ज़्यादा है और जिनको शौक़ ऐसा नहीं है या अन्तर की महिमा उनके चित्त में नहीं समाई है या कि वे मन पर ज़ोर नहीं दे सकते, उनको यह बचन कम पसंद आवेगा।

९१—तपन हमेशा एक सी नहीं रहेगी। आहिस्ता आहिस्ता इसके साथ शीतलता भी मिलती जावेगी और एक दिन सतगुरु दयाल अपनी मेहर से बर्षा प्रेम की फ़रमावेंगे। पर इस बात को कुछ देर चाहिये और इस दर्मियान में दया हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दिन दिन ज़्यादा मालूम होती जावेगी। यह नहीं कि निरा रूखा फ़ीका रहे। और हुज़ूर राधास्वामी दयाल की मौज की ख़बर नहीं कि चाहे जब बख़्शिश फ़रमावें, पर इसमें कुछ शक नहीं है कि वे सब तरह से दया अपनी कर रहे हैं, पर जीवों को अपनी कम सफ़ाई के सबब से दया का हाल कम मालूम होता है और मलीनता के सबब से तपन ज़्यादा व्यापती है। सो कुछ हर्ज नहीं है, जिस क़दर मलीनता घटती जावेगी, उसी क़दर सफ़ाई होती जावेगी और उसी क़दर दया भी मालूम होती जावेगी। इस वास्ते घबराना और निरास होना नहीं चाहिये। हुज़ूर राधास्वामी बड़े समर्थ और महा दयाल हैं और जीवों का कल्यान सदा करते हैं और जो जीव आप अपना फ़िक्र कर रहे हैं, उनकी ख़बर ज़्यादा लेते हैं।

९२—इस ज़माने में बहुत कम लोग हैं जिनको फ़िक्र अपने जीव के कल्यान का है। हर कोई संसार के पदार्थ चाहता है और उसी में मगन होता है। यह सब हुज़ूर राधास्वामी दयाल की कृपा है कि अपने जीवों को संसार के पदार्थों का पूरा भोग और रस नहीं देते हैं और चरन और दर्शन की चाह उनके मन में बढ़ाते जाते हैं। सो यह चाह उनहीं की बख़्शी हुई है और वे इस चाह को आप एक दिन आहिस्ता आहिस्ता पूरा करेंगे। घबराओ मत, भरोसा दृढ़ रक्खो। इस क़दर

दया और दात जैसी हुज़ूर राधास्वामी दयाल इस समय में जीवों पर कर रहे हैं, किसी अगले वक्त़ में नहीं हुई। सो उनकी दया से सब काम पूरा होगा। जल्दी में नुक़सान का डर है और हरज भी है, यानी जैसा चाहिये काम पूरा नहीं बनता है। आहिस्ता आहिस्ता काम पूरा और दुरुस्त होता है।

९२–भूल और चूक हुज़ूर राधास्वामी दयाल हमेशा माफ़ फ़रमाते हैं, पर जिस क़दर बने सम्हाल करनी चाहिये और हुज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रार्थना करनी चाहिये। वे आहिस्ता आहिस्ता सब अंग दुरुस्त कर लेंगे, जल्दी न करो। और जहाँ तक हो सके, जो जो जुगत बताई गई हैं, उनमें से जौन सी बन सके उसी को करो, पर ख़्याल भी रक्खो कि जैसे बने अंतर में धसना और वहीं शान्ति थोड़ी बहुत प्राप्त करना चाहिये।

९४–मन का हाल ऐसा है कि कभी भाव और कभी अभाव में बरतता है। सतगुरु इसके हाल को खूब जानते हैं और इसी सबब से जीवों की भूल चूक पर नज़र नहीं करते हैं और अपनी दया हमेशा जारी रखते हैं। और अन्त में आप अपनी कृपा से इस जीव को निकाल लेंगे और जब जब यह चूकेगा और भूलेगा, तब तब अपनी दया से आप इसके औगुनों को इसको दिखला कर सम्हालेंगे। और हर वक्त़ इसकी सम्हाल वे आप रखते हैं। इसकी क्या ताक़त है कि अपने आप को सम्हाले या कि बुरे कामों से बचे। हुज़ूर राधास्वामी दयाल का यह हुक्म है :—

॥ कड़ी ॥

गुरू और शब्द यह दोऊ मीत। नहिं कोइ और इन धर चीत।
यही सतपुरुष यही करतार। लगावें तोहि इक दिन पार।
करें वह नित्त तेरी सार। तेरे तन मन के हैं रखवार।

बिसारो मत उन्हें हर बार। दुक्ख और सुक्ख रहो उन धार।
शुकर कर राख हिरदे धार। मिटावें दुक्ख सबही झार।

इसमें कोई बात बाक़ी नहीं रही। क्या तन और क्या मन, दोनों के रखवार वे आप हैं। पर यह हाल उन सेवकों का होगा, जो पूरे पूरे सरन में आये हैं यानी अपनाये हुए हैं। और सुरत तो ख़ुद उनकी अंश है। उसकी तो सदा रक्षा रहती है और रक्षा क्या बल्कि वह कभी उलझेरे में फँसी भी नहीं है, सिर्फ़ तन मन के संग से झोका खाती है, पर आप अलग है। पर इनका संग कर रही है, इसी सबब से फँसी नज़र आती है। और हक़ीक़त में जब तक कि सतगुरु नहीं मिलेंगे और अपनी दया से उसको न निकालेंगे, यानी तन मन से अलग न करेंगे, तब तक बार बार जन्म धर के फँसी रहेगी और चौरासी के चक्कर से नहीं निकलेगी।

९५—सच्चे सेवकों के बड़े भाग हैं कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल ने अपनी मौज दया से आप उनको चरनों में खैंचा और लगाया, जैसा कि इन कड़ियों में लिखा है :—

॥ कड़ी ॥

बड़े भाग जिन सतगुरु पाये। चौरासी से तुर्त हटाये।
दुक्ख सुक्ख जो ब्यापत होई। पिछले कर्म भोग हैं सोई।
कोइ दिन रोग सोग हट जावें। देर नहीं जल्दी भुगतावें।

यह सब हुज़ूर राधास्वामी दयाल की कृपा के चरित्र हैं। वे अपनी दया से आप सच्चे परमार्थी को आहिस्ता आहिस्ता अन्तर में लगाते हैं। भरोसा रक्खो और चरनों में प्रार्थना करते रहो। वे सब काम आप करेंगे और जैसी जैसी मदद अन्तरी और बाहर की दरकार होगी, अपनी दया से आप देंगे। इसमें कुछ शक नहीं है कि जीवों का भाग बहुत बड़ा है कि वे ऐसे दयाल मालिक की चरन सरन में

आये, नहीं तो देखो संसार का क्या हाल है कि काल के चक्कर में सब जीव बह रहे हैं और न अपनी ख़बर और न अपने मालिक की ख़बर और न इस बात का खोज। बल्कि जो कोई कुछ कहे और समझावे, तो सुनना और समझना और मानना बिलकुल नहीं चाहते हैं। इस वास्ते बारम्बार हुज़ूर राधास्वामी दयाल का शुकराना वाजिब है कि ऐसा ऊँचा और गहरा मत और ऐसा ऊँचा घर बख़्शा और ऐसी जुगत बतलाई है कि तीन लोक में किसी को हासिल नहीं है। फिर थोड़े दिनों की देरी के सबब से क्यों घबराते हो, दिन दिन तरक्क़ी और सफ़ाई हासिल होती जाती है।

९६—जो कुछ मलीनता मालूम होती है, वह जल्दी साफ़ होगी। और जब तक कि बाक़ी है, कुछ उसमें भी मसलहत है कि थोड़े दिन उसका थोड़ा बहुत रहना मुनासिब और ज़रूर है वास्ते सफ़ाई कुल के और कार्रवाई तन और मन के, क्योंकि हाल में दोनों काम परमार्थी और संसारी जारी हैं। कभी अपने मन में संशय मत लाओ कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल भूल गये हैं। नहीं, जो जो हुज़ूर राधास्वामी दयाल को मान रहा है और ध्याता है, वह हुज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों में है और हुज़ूर राधास्वामी दयाल को हर वक्त उसकी सम्हाल आप मंज़ूर है, चाहे वह सतसंग में रहे या दूर। इस वास्ते घबराना मत और भरोसा दृढ़ रखना और शुकराना बारम्बार करते रहना और आगे के वास्ते उम्मेद तरक़्क़ी और बेहतरी की रखना। हुज़ूर राधास्वामी दयाल ऐसे नहीं हैं कि जीवों की मेहनत का ख़्याल करके इनाम न दें, बल्कि ऐसे महा दयाल हैं कि सब पर अपने बच्चों की तरह दया करते हैं और भूल और चूक का ख़्याल न करके अपनी दया से वह दात बख़्शने वाले हैं कि जो जीवों के ख़्याल और समझ में भी नहीं आ सकती है।

९७—प्रथम तो हुज़ूर राधास्वामी दयाल आप सम्हाल फ़रमाते हैं, पर जीवों को भी अपना ज़ोर जिस क़दर बने लगाते रहना मुनासिब है।

इसमें भी मसलहत है और इस मन की गढ़त ऐसे ही होती है। सम्हाल रखने वाले वे आप दयाल हैं, दूसरे की क्या ताक़त और इस जीव की कहाँ गति कि किसी तरह की सम्हाल अपनी रख सके। पर धन्य धन्य हुज़ूर राधास्वामी दयाल जो ऐसे नालायक़ों को अपनी दया करके सच्चे परमार्थी बना रहे हैं और उनका रास्ता चला रहे हैं।

९८—सतगुरु के स्वरूप का ध्यान स्थान के हिसाब से दिन प्रति[1] नियम से करना मुनासिब है और जिस क़दर आनंद की प्राप्ति होवे, उसको बहुत समझना चाहिये। सहज सहज कभी कभी साफ़ दर्शन भी मिलेगा, पर जिस क़दर दर्शन हासिल होवे या आनंद प्राप्त होवे उसको दया समझना चाहिये। सबब देरी का यह है कि मन अभी बिलकुल सफ़ा नहीं हुआ है। जितनी इसमें मलीनता है, उतनी दर्शनों में भी सफ़ाई की कमी है। सो सहज सहज सफ़ाई होती जाती है, घबराना मुनासिब नहीं है और सब काम मौज के हवाले करके, जिस क़दर अपने से होशियारी बने, करे जाना चाहिये। बाक़ी सतगुरु दयाल अपनी दया से आप सम्हालेंगे।

९९—सतगुरु की दया का भरोसा रखकर अभी दोनों काम स्वार्थी और परमार्थी करे जाओ। अभी ऐसी ही मौज नज़र आती है। आगे जैसी मौज होगी, वे आप उसका बंदोबस्त कर देंगे और जो कुछ मुनासिब होगा कर लेंगे। और जो हालत गुज़र रही है, बिना मौज के नहीं है और जब यह हालत हुज़ूरी मौज से है, तो उसमें ज़रूर मसलहत और फ़ायदा होगा, चाहे हाल में नज़र आवे या नहीं। इससे भरोसा चरनों का दृढ़ रखकर हिम्मत रक्खो और दया का बल लिये जाओ और उसके मुआफ़िक़ काम करते रहो।

१००—वक़्त तकलीफ़ के तबीयत को निहायत घबराहट और बेकली होती है, पर क्या किया जावे। इसमें भी कुछ मौज होगी, नहीं तो क्यों ऐसी हालत होवे। पर वह मौज अभी अच्छी तरह समझ में नहीं

१—दिन प्रति—हर रोज़।

आती। और जो बचन हुज़ूरी हैं, वह वक्त तकलीफ़ के याद नहीं आते हैं और जो आवें भी, तो उनका असर दिल पर ऐसा नहीं होता है कि बेकली को दूर करे। सबब इसका सिवाय इसके कि मन अभी माया और संसार का मुहताज है दूसरा समझ में नहीं आता है और असल में ऐसा ही हाल है, क्योंकि अपनी हालत ग़ौर करके देखने से अपना हाल अपने तईं ख़ूब मालूम होता है। फिर चिंता नहीं है, हुज़ूर राधास्वामी दयाल का भरोसा चाहिये। वे एक न एक दिन निर्मल कर लेंगे और अपनी दया से ताक़त बख़्शेंगे।

१०१—हुज़ूर राधास्वामी दयाल हैं। वे आप अन्तर में थोड़ा थोड़ा सहारा देते जायँगे कि जिसमें तन की तकलीफ़ और बेक़रारी[1] कम होवे या न रहे, पर मन और सुरत में थोड़ी बहुत बेकली ज़रूर चाहिये, क्योंकि बग़ैर इसके चाल नहीं चलती है और सफ़ाई नहीं होती।

१०२—जो जीव इस बात का सोच करते हैं कि क्या उपाय करें कि जिससे परमार्थ का फल जल्द मिले, सो सिवाय इसके कोई उपाय नहीं है कि हुज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीति और प्रतीति का बढ़ाना और निश्चय दृढ़ रखना, यानी सरन पूरी और पक्की उनके चरनों की धारन करना। यही जतन मुनासिब है। सो इस जीव की तो कुछ गति नहीं है। यह बात भी जिस किसी को अपना फ़िक्र रहता है और चरनों में प्रार्थना इस बात की रखता है, उसको हुज़ूर राधास्वामी दयाल अपनी दया और कृपा से आप बख़्शेंगे यानी प्रीति और प्रतीति आहिस्ता आहिस्ता बढ़ाते जावेंगे। जो उनके चरनों में थोड़ी भी प्रीति है और सरन उनकी ऐसी ले रक्खी है कि सिवाय उनकी दया के दूसरे का भरोसा चित्त में नहीं आता है, तो कुछ सोच की बात नहीं है। ऐसे जीवों को भी सँभालेंगे।

१०३—पूरी सरन का स्वरूप यह है कि सतगुरु राधास्वामी दयाल को सर्व समर्थ जाने और सब कामों में, क्या संसारी क्या परमार्थी,

१—बेचैनी।

उन्हीं के चरनों का भरोसा अन्तर में रक्खे। दूसरे की तरफ़ चित्त न जावे। बाहरी कामों के वास्ते बाहरी सहारा जो लेवे तो कुछ हर्ज नहीं, पर मन में यह समझता रहे कि यह बाहरी आसरे भी उनकी मौज से पैदा हुए और काम देते हैं, बग़ैर उनकी मौज के कोई भी कुछ मदद और सहारा नहीं दे सकता है। और अन्तर में यह निश्चय दृढ़ रहे कि जैसा सतगुरु राधास्वामी चाहेंगे वैसा करेंगे, दूसरा कोई समर्थ नहीं है और न कोई बिना उनकी मौज और दया के कुछ कर सकता है। जिसकी ऐसी सरन है, वह उनके भरोसे पर रहे और उनकी मौज के साथ मुआफ़िक़त करे[1]। और जो अपने मन की हालत देख कर चित्त में डर आता है, सो यह भी दया है। ऐसा डर लेकर सरन को ज़्यादा मज़बूत करे, और नहीं तो ढीलमढाल रहेगा। और चरनों में कभी कभी पुकार और प्रार्थना वास्ते प्रीति और प्रतीति की तरक्क़ी के करना चाहिये।

१०४–जिनके दिल में मुख्य चाह सतगुरु राधास्वामी दयाल के चरनों की प्राप्ति की है और दूसरी चाहें अगर हैं भी, तो गौण यानी थोड़ी हैं, उनको सच्चे प्रेम की दात मिलेगी। और मन का तो स्वभाव संसारी है, यह तो जब झुकेगा तो उसी तरफ़ को। पर जिसके ऊपर हुज़ूर राधास्वामी दयाल की मेहर और दया है, उसकी वे आप सँभाल करते हैं और संसारी चाहों से उसको बचाते हैं और जो उसके दिल में तरंगें बेफ़ायदा उठती हैं, तो उन चाहों को पूरा नहीं होने देते और दिन दिन अपने चरनों के दर्शन की चाह बढ़ाते हैं और उसी में उसको रस देते हैं। इसी तरह आहिस्ता आहिस्ता सफ़ाई होती जाती है और एक दिन कारज पूरा हो जावेगा।

१०५–जीव की क्या ताक़त कि सतगुरु की बख़्शायश[2] के लायक़ सेवा और भजन कर सके। वे तो मेहर और दया से तारेंगे। बानी में फ़र्माया है :—

१—मुआफ़िक़त करे—मेल मिलावे। २—बख़्शिश, दात।

॥ कड़ी ॥

जिस पर दृष्टि पड़ी मेरे गुरु की, सोई पार गई ॥
कौन कहे महिमा अब उनकी, जिनको सतगुरु चरन लगावें ॥

अब कुछ सोच मत करो, पर अपनी हालतों पर शरमाते और पछताते रहो और चरनों में दीनता और प्रार्थना करते रहो। सब तरह से वे आप कारज सम्हालेंगे, जीव की कुछ ताक़त नहीं है। और जैसा जैसा और जब जब मुनासिब समझेंगे, उसी मुआफ़िक़ कार्रवाई करेंगे और करा लेंगे।

१०६—यह मन ऐसा खोटा है कि ज्यों की त्यों सतगुरु दयाल की प्रतीति नहीं करता है। इसी सबब से घबराहट पैदा होती है, नहीं तो उनके चरनों की याद में और दया के भरोसे में निरा आनंद ही आनंद है। जो कभी ऐसी प्रतीति आ भी जाती है, तो ठहरती नहीं है। पर इसमें भी कुछ मसलहत है। यह हालत जीवों की अभी इसी लायक़ है, यानी अभी सफ़ाई पूरी नहीं हुई है। और इतना और ख़्याल रक्खो कि जो मौज से होता जावे, उस पर जैसे बने तैसे मन को खैंच खाँच कर मौज के अनुसार बरताव के दर्जे पर लाओ। तब फल उसका हमेशा बेहतर नज़र आवेगा।

१०७—सवाल एक शख़्स का—कि तुम राधास्वामी नाम कहते हो, स्वामी क्यों नहीं कहते? ऐसा सुना है कि राधा नाम सेवक का है, तो सेवक के नाम को स्वामी के नाम के संग मिला कर सुमिरन करना दुरुस्त नहीं मालूम होता है।

जवाब— राधा आदि सुरत का नाम है और स्वामी नाम आदि शब्द का है। आदि शब्द से जो प्रथम धारा जारी हुई, उसका नाम राधा है। जो कोई इस धारा को पकड़ेगा, वही आदि शब्द में पहुँचेगा। इस वास्ते इस धारा का पहले से सुमिरना और पकड़ना सब चलने वालों को मुनासिब है, क्योंकि बिना प्रीति इस धारा के

रास्ता नहीं चल सकता है और आदि शब्द में प्रीति बग़ैर इस धारा में प्रीति करने के लग नहीं सकती है। और जोकि यह धारा साक्षात् शब्द का स्वरूप है और उसमें और आदि शब्द में कुछ भेद नहीं है, सिर्फ़ धारा के जारी होने से दो दिखाई देते हैं, जैसे जल और उसकी तरंग, इस वास्ते यह दोनों नाम राधा स्वामी असल में एक हैं। पर जब प्रकाश दो रूप का हुआ, तो दो नाम हो गये। इस वास्ते दोनों नाम का जाप यानी सुमिरन और उन दोनों रूप में प्रीति करना मुनासिब और ज़रूरी है। बग़ैर दोनों नाम लेने के रास्ता नहीं चलेगा। और जो कि सिर्फ़ स्वामी को मनावेंगे, वे जहाँ के तहाँ बैठे रहेंगे, रास्ता नहीं चलेगा और जो इस धारा को सुमिरते हुए और पकड़ते हुए स्वामी की तरफ़ चलेंगे, वे पहुँचेंगे। पहले इस धारा से काम पड़ेगा, फिर स्वामी से। इस वास्ते पहले नाम इस धारा का और फिर नाम स्वामी का, दोनों मिला कर सुमिरना चाहिये। और इस धारा को जो आदि सुरत कहा है, तो इससे यह मतलब नहीं है कि वह धारा वह सुरत है कि जो नीचे उतर कर काल के देश में आन कर देह में फँस गई। यह तो असल धारा सुरत की है जो आदि में प्रगट हुई है। इसी तरह और भी धारें दूसरे मुक़ामों से जारी हुईं। यह धारा तो अगम लोक में ख़त्म होकर रह गई, फिर वहाँ से इसी तरह से धारा निकली और ऐसे ही सत्तलोक से। इस वास्ते यह धारा जो सुरत की हर एक मुक़ाम से निकलती आई, इसी धारा को पकड़ कर दर्जे बदर्जे चलना चाहिये और जो सुरत कि यहाँ बस गई और संसार में उसकी मुख्यता हो गई, वह अब उस धारा से किसी क़दर अलग हो गई। और जो धारा कि आदि में प्रगट हुई वह धुर मुक़ाम से मिली हुई और एक हो रही है, इस वास्ते यह धारा सेवक नहीं हो सकती। पर और सुरतें जो नीचे उतर आईं और जो यहाँ आकर ठहर गईं, वह बेशक सेवक हैं। यह धारा तो ख़ास स्वामी का स्वरूप है और हमेशा स्वामी के संग रहती है, कभी अलग नहीं हुई है और जो सुरत उस असली धारा को पकड़ कर स्वामी के चरनों में पहुँच जावे, तब वह सुरत

असली सुरत में मिल जावेगी, यानी वह सुरत और राधा सुरत एक हो जावेंगी। उस वक्त सेवक स्वामी मिल गये, फिर ऐसे सेवक की सुरत को जो राधा सुरत कहो तो मुज़ायक़ा[1] नहीं है। और वह सुरत मुआफ़िक़ अपने स्वामी के, जिनसे वह जाकर मिली, पूजने और सराहने योग्य है, क्योंकि उस सुरत से प्रीति करने से और सुरतें भी उसके उपदेश के अनुसार करनी करके स्वामी के चरनों में पहुँच सकती हैं।

॥ कड़ी ॥

यह करनी का भेद है, नाहीं बुद्धि बिचार।
बुद्धि छोड़ करनी करो, तो पाओ कुछ सार॥

१०८—यह दुरुस्त है कि निश्चल होना मन का मुश्किल है और निर्मल भजन करना भी मुश्किल है, पर स्वरूप का ध्यान और नाम का सुमिरन किसी क़दर आसान है। और फिर अभ्यास अंतर में ज़रूर करना चाहिये, जिस क़दर बन सके। और जो नहीं बने, तो बिलफ़ेल[2] दो चार शब्द का पोथी में से मन और सुरत के साथ पाठ करना और नाम का सुमिरन ज़बान दिल से पहले स्थान के स्वरूप के ध्यान सहित करना चाहिये। बाक़ी हुज़ूर राधास्वामी दयाल की दया का भरोसा रखना चाहिये। उनको गढ़त मन की सब तरह मंज़ूर है। जो अब जैसा चाहिये अभ्यास नहीं बनता है, तो आयंदा वे भजन और सुमिरन ध्यान मुनासिब तौर पर आप करावेंगे।

१०९—सवाल—काल और सुरत से क्या निस्बत[3] है?

जवाब—जैसे बिल्ली को चूहे के साथ—यानी सुरत जो सतगुरु की अंश है, उसको काल और मन, उसके प्यादे, ने अपने बस कर रक्खा है और सतगुरु की तरफ़ से बेमुख कर रक्खा है। जब सुरत सतगुरु के सन्मुख होती है और बचन सुन कर प्रीति और प्रतीति बढ़ाना चाहती

१—हर्ज। २—कम से कम। ३—संबंध।

है, तब मन अपनी घात में रहता है जैसे बिल्ली चूहे की घात में रहती है कि ज्यों चूहे ने बिल में से सिर निकाला, वोंहीं लपकी और चूहा बिल में भाग गया। इसी तरह चूहा निकलने की घात में रहता है और बिल्ली पकड़ने की घात में रहती है, मगर चूहा मौक़ा पाकर निकल जाता है। इसी तरह सुरत भी मन के घेर में है और सतगुरु के बचन सुनकर इरादा निकलने का करती है, पर मन उसको अनेक तरह के चक्कर और ख़्याल में डाल देता है। यही सबब है कि जीव साधारण तौर पर नित्य सतसंग करते हैं और हालत नहीं बदलती है। और जो चेत कर सतसंग करते हैं, वही काल की घात को और हुज़ूर राधास्वामी सतगुरु की दया को निरखते और परखते हैं और काल के जाल को सतगुरु के बल से तोड़कर आहिस्ता आहिस्ता साफ़ निकल जाते हैं। जो सच्चे परमार्थी हैं उनको इस हाल की ख़बर होगी और संसारी और रोज़गारी लोगों को, जो काल को ही दयाल जानकर उसके जाल के फंदे में पड़े हैं और मन की ख़्वाहिशों के मुआफ़िक़ कार्रवाई करते हैं, इस हाल की क्या ख़बर है।

११०—सतगुरु फ़रमाते हैं कि जीव के अन्तर में अनेक तरह की हिलोरें काम और क्रोध और लोभ और मोह वग़ैरह की उठती हैं। सबब इसका यह है कि इन सबका भंडार इस जीव के अन्तर में है। जो जो तरंग ज़ोर करती है, उसके ख़ज़ाने से अव्वल हिलोर उठती है और वहाँ से चलकर मिस्ल धार फ़व्वारे के खड़ी होकर इरादा बाहर निकलने का करके उसी द्वारे की तरफ़ रुजू होती है जिस द्वारे यानी इन्द्री के भोग से उसका संबंध है। इस हाल की उन्हीं को ख़बर पड़ती है जो चेत कर सतसंग और भजन करते हैं और बचन सुनकर उसका मनन भी बाद सतसंग के करते हैं और उसके मुआफ़िक़ बरताव भी करना चाहते हैं। उनको हिलोर उठते ही ख़बर पड़ जाती है और वे, जहाँ तक मुमकिन होता है, तरंगों की धार को उठने नहीं देते। और जो चेत कर सतसंग नहीं करते, उनको हिलोर और उसकी धार इस तरह

से बहा ले जाती है जैसे कोई अपने घर के अन्दर बैठा है और जो कहीं बाहर के बाजे या तमाशे की आवाज़ सुनी, फ़ौरन् घर के अन्दर से निकल कर खिड़की या झरोखे से तमाशा देखने लगा और जिनको ज़्यादा शौक़ हुआ तो घर से बाहर निकल कर खेल और तमाशे में शामिल हो गए इस क़दर कि घर की सुध भी नहीं रही। ऐसे जो जीव हैं, यानी जो मन की हिलोर और तरंगों में बह रहे हैं और इस हालत से बेख़बर हैं, उनको भजन और सतसंग और दर्शन का फ़ायदा बहुत कम होता है और जो चेत कर भजन और सतसंग करते हैं, वे मन और इंद्रियों को थोड़ा बहुत अपने बस में रखते हैं।

पुस्तकों का सूचीपत्र

ये पुस्तकें मैनेजर पब्लीकेशन्स, दयालबाग़ (आगरा) से मिल सकती हैं

	नाम		मूल्य
	परम गुरु स्वामीजी महाराज रचित		
१	सारबचन (पद्य)	हिन्दी	७.००
२	सारबचन (गद्य)	,,	३.००
	परम गुरु हुज़ूर महाराज रचित		
३	राधास्वामी मत प्रकाश	अंगरेज़ी	१.५०
४	पिलग्रिम्स पाथ (हुज़ूर महाराज के पत्र)	,,	१.५०
५	राधास्वामी मत संदेश	हिन्दी	१.००
६	राधास्वामी मत उपदेश	,,	१.००
७	निज उपदेश	,,	१.००
८	प्रेम उपदेश	,,	१.००
९	सार उपदेश	,,	१.२५
१०	प्रश्नोत्तर	,,	१.००
११	जुगत प्रकाश	,,	२.००
१२	प्रेमबानी भाग १	,,	५.००
१३	,, भाग २	,,	५.००
१४	,, भाग ३	हिन्दी	५.००
१५	,, भाग ४	,,	३.००
१६	प्रेमपत्र भाग १	,,	४.००
१७	,, भाग २	,,	४.००
	परम गुरु महाराज साहब रचित		
१८	डिस्कोर्सेज़ आन राधास्वामी फ़ेथ	अंगरेज़ी	५.००
	परम गुरु सरकार साहब रचित		
१९	प्रेम-समाचार	हिन्दी	१.२५
	राधास्वामी सतसंग सभा के स्वत्वाधिकार में अनुवादित पुस्तकें		
२०	राधास्वामी मत प्रकाश (हुज़ूर महाराज रचित)	बंगला	१.२५
२१	अमृतबचन (परम गुरु महाराज साहब रचित पुस्तक 'डिस्कोर्सेज़ आन राधास्वामी फ़ेथ' का अनुवाद)	,,	३.००
	परम गुरु स्वामीजी महाराज रचित		
२२	सारबचन	अंगरेज़ी	३.२५

	नाम			मूल्य
	परम गुरु हुज़ूर महाराज रचित			
२३	प्रेम पत्र भाग १		अंगरेज़ी	६.००
२४	,, भाग २		,,	६.००
२५	,, भाग ३		,,	६.००
२६	,, भाग ४		,,	६.००
२७	,, भाग ५		,,	६.००
२८	,, भाग ६		,,	२.००
२९	राधास्वामी मत उपदेश		,,	१.००
३०	राधास्वामी मत संदेश		,,	१.००
	हुज़ूर साहबजी महाराज रचित			
३१	यथार्थ प्रकाश भाग १	(विशेष संस्करण)	,,	६.००
३२	,,	(साधारण संस्करण)	,,	३.५०
३३	,, भाग २		,,	५.५०
३४	,, भाग ३	(प्रथम पुस्तक)	,,	५.५०
३५	,,	(द्वितीय पुस्तक)	,,	५.००
३६	जिज्ञासा		,,	१.००
३७	राधास्वामी मत दर्शन		,,	१.००
३८	प्रेम संदेश		,,	१.००
३९	डिस्कोर्सेज भाग १ (सतसंग के उपदेश)		,,	४.००
४०	,, भाग २		,,	४.५०
४१	,, भाग ३		,,	३.२५
४२	जतन प्रकाश		,,	१.००
४३	सिलैक्शन्स फ्राम प्रेम सन्देश		,,	१.००
	राधास्वामी सतसंग सभा के स्वत्वाधिकार में सम्पादित या लिखित पुस्तकें			
४४	फ्लोर लैटर्स (हुज़ूर सरकार साहब)		,,	१.००
४५	सिलवरी स्पीचेज़		,,	०.२५
४६	शब्द संग्रह भाग १		हिन्दी	३.५०
४७	,, ,, भाग २		,,	४.००
४८	संत बानी संग्रह भाग १		,,	१.००
४९	संत बानी संग्रह भाग २		हिन्दी	१.२५
५०	रत्नावली		,,	१.००
५१	दयालबाग़ पैम्फ्लेट (छोटा)		अंगरेज़ी	०.५०